प्रधानमंत्री मोदी की नॉर्वे यात्रा से पूरी... पेज 5

दैनिक कारखाने का सफर

मुकाबले के चक्कर में आदमी का जीवन एक कारखाने के समान हो गया है, आदमी का सबसे विश्वसनीय अखबार

अपनी हथेली में अभी... पेज 7

वर्ष 6, अंक 338 | भोपाल, बुधवार 20 मई, 2026 | ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, चतुर्थी 2083 | मूल्य 2 रुपए

पीएम मोदी ने नॉर्डिक देशों के नेताओं संग की बैठक, भारत के साथ संबंधों की जमकर की तारीफ

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी ओस्लो

दैनिक कारखाने का सफर। ओस्लो
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पांच देशों की यात्रा के आखिरी चरण में नॉर्डिक देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ बैठक की है। इस दौरान उन्होंने भारत-नॉर्डिक संबंधों की जमकर तारीफ की। उन्होंने भारत-यूरोपीय यूनियन फ्री ट्रेड एग्रीमेंट को दोनों पक्षों के बीच संबंधों के लिए मील का पत्थर बताया।
पीएम मोदी ने कहा कि लोकतंत्र, कानून का शासन और बहुपक्षवाद के प्रति हमारी साझा प्राथमिकताएं, हमें स्वाभाविक साझेदार बनाते हैं। टेक्नोलॉजी और स्थिरता में हमारी साझा प्राथमिकताएं, हमारे संबंधों को अवसरों से भर देती है। पीएम मोदी ने आगे कहा कि अक्टूबर 2025 से नॉर्वे, आइसलैंड और दूसरे EFTA देशों के साथ, हमने व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौता लागू किया। कुछ ही महीने पहले, हमने भारत-यूरोपियन यूनियन फ्री ट्रेड

एग्रीमेंट किया, जिसमें डेनमार्क, फिनलैंड और स्वीडन भी शामिल हैं। इन सहयोगी ट्रेड एग्रीमेंट से, हम भारत और नॉर्डिक देशों के साथ संबंधों में, एक नए स्वर्णिम युग की शुरुआत करने जा रहे हैं।
पीएम मोदी ने इस दौरान ईरान और यूक्रेन में जारी संघर्षों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वैश्विक तनाव और संघर्ष के इस दौर में, भारत और नॉर्डिक देश साथ मिलकर, एक नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था को बल देते रहेंगे। यूक्रेन हो या वेस्ट एशिया, हम संघर्ष की शीघ्र समाप्ति और शांति के प्रयासों का समर्थन करते रहेंगे।
आतंकवाद पर पश्चिमी देशों के रवैये की आलोचना की उन्होंने आतंकवाद पर भी पश्चिमी देशों के दोहरे रवैये की जमकर आलोचना की और इस मुद्दे पर सहयोग मांगा। पीएम मोदी ने कहा कि हम इस बात पर सहमत हैं कि मल्टीलेटरल इंस्टीट्यूशन्स का रिफॉर्म ज़रूरी भी है और अर्जेंट भी। और टेररिज्म पर भी हमारा क्लियर और यूनाइटेड स्टैंड है- कोई कॉम्प्रोमाइज़ नहीं। कोई डबल स्टैंडर्ड नहीं। भारत-नॉर्डिक देश संबंधों को सराहा पीएम मोदी ने नॉर्डिक देशों के साथ भारत के संबंधों की सराहना भी की। उन्होंने कहा कि आज मैने कई बार, "संबंध" शब्द का प्रयोग किया। कई नॉर्डिक भाषाओं में "संबंध" शब्द का अर्थ है, connection, relations, एक bond। हिन्दी में भी "संबंध" का अर्थ यही है। यह केवल शब्दों की समानता नहीं है। यह हमारे विचारों की निकटता को दर्शाता है।

एमपी में भीषण गर्मी से 2 की मौत..लू की आशंका

नौगांव में पारा 47 डिग्री, भोपाल, इंदौर में तेज गर्मी से बाजार-सड़कें सूनी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्य प्रदेश भीषण गर्मी की चपेट में है और इसका असर अब जनजीवन पर भी दिखाई देने लगा है। मंगलवार को प्रदेश में तेज गर्मी और लू जैसे हालात के बीच दो लोगों की मौत हो गई। दोनों को हीट स्ट्रोक यानी लू लगने की आशंका जताई गई है।

राजधानी भोपाल और इंदौर में दोपहर के समय तेज धूप और गर्म हवाओं के कारण बाजार और सड़कें सूनी नजर आईं। दोनों शहरों के ड्रोन VIDEO में भी सड़कों पर आवाजाही कम दिखी। मौसम विभाग ने अगले तीन दिन प्रदेश में भीषण गर्मी और तापमान में 2 से 3 डिग्री तक और बढ़ोतरी का अनुमान जताया है। कई शहरों में लू जैसे हालात बने हुए हैं और फिलहाल राहत के संकेत नहीं हैं। सतना के मझगवां बाजार में खरीदारी करने पहुंचे 50 वर्षीय देवराज सिंह गोंड की अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद मौत हो गई। घटना के समय इलाके में तापमान 45 डिग्री के पार था। डॉक्टरों ने पोस्टमार्टम नहीं होने के कारण मौत की वजह की पुष्टि नहीं की है, हालांकि लू लगने की आशंका जताई जा रही है। टीकमगढ़ में बस में महिला बीमार, अस्पताल में मौत वहीं, टीकमगढ़ में ओरछा से आ रही एक यात्री बस में महिला की तबीयत अचानक बिगड़ गई। अस्पताल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। अस्पताल के डॉक्टरों के मुताबिक शुरुआती तौर पर मामला हीट स्ट्रोक यानी लू से जुड़ा लग रहा है। हालांकि, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत की असली वजह साफ होगी। प्रदेश में तापमान लगातार रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच रहा है। छतरपुर के नौगांव में मंगलवार को पारा रिकॉर्ड 47 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जो खजुराहो से भी ज्यादा रहा। खजुराहो में अधिकतम तापमान 46.4 डिग्री दर्ज किया गया। प्रदेश में 22 शहर ऐसे रहे, जहां अधिकतम तापमान 44 डिग्री के पार पहुंच गया। मौसम विभाग के अनुसार नौगांव और खजुराहो के बाद दतिया तीसरा सबसे गर्म शहर रहा, जहां तापमान 45.8 डिग्री दर्ज किया गया। राजगढ़ में 45.6 डिग्री, दमोह में 45.5 डिग्री, शाजापुर, टीकमगढ़, गुना और सागर में 45.2 डिग्री, सतना में 45.1 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। ग्वालियर में पहली बार पारा 45 डिग्री प्रदेश के बड़े शहरों में ग्वालियर में सीजन में पहली बार तापमान 45 डिग्री तक पहुंचा। जबलपुर में 44.6 डिग्री, भोपाल में 44.2 डिग्री, उज्जैन में 43.8 डिग्री और इंदौर में 43.7 डिग्री तापमान दर्ज किया गया।

भारत आ रहे हैं व्लादिमीर पुतिन, 12 सितंबर को दिल्ली में ब्रिक्स सम्मेलन में शामिल होंगे रूसी राष्ट्रपति

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी मॉस्को

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस साल भारत के दौरे पर आने वाले हैं। भारत साल 2026 में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने जा रहा है। ऐसे में रूसी राष्ट्रपति इस समिट में शामिल होने के लिए सितंबर 2026 में भारत पहुंचेंगे। दक्षिण अफ्रीका में रूसी दूतावास ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर क्रेमलिन के सहयोगी यूरी उशाकोव के हवाले से जानकारी दी है कि व्लादिमीर पुतिन 12-13 सितंबर को नई दिल्ली में ब्रिक्स समिट में शामिल होंगे। रूसी राष्ट्रपति पुतिन सालभर के अंदर दूसरी बार भारत के दौरे पर आने वाले हैं। भारत ने इस साल 13 जनवरी 2026 को ब्रिक्स समूह की अध्यक्षता संभाली थी।
14 जनवरी के आसपास भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इस समिट से जुड़े आधिकारिक थीम, लोगो और वेबसाइट का शुभारंभ किया था। इससे पहले पुतिन दिसंबर 2025 में दो दिवसीय दौरे पर भारत पहुंचे थे, जहां उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की और 23वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन में शामिल हुए। दोनों देशों ने आपसी संबंध को रणनीतिक साझेदारी में बदला। इस दौरान दोनों नेताओं ने भारत और रूस के बीच विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए अपना समर्थन दोहराया। भारत और रूस के शीर्ष नेतृत्व ने इस लंबे समय से चले आ रहे दोनों देशों के संबंध की खासियत पर जोर दिया, जो आपसी भरोसे, एक-दूसरे के खास राष्ट्रीय हितों का सम्मान और रणनीतिक मेल है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि साझा जिम्मेदारियों वाली बड़ी ताकतों के तौर पर यह जरूरी संबंध वैश्विक शांति और स्थिरता का सहारा बना हुआ है। इसे बराबर और कभी न बंटने वाली सुरक्षा के आधार पर सुनिश्चित किया जाना चाहिए। समिट के दौरान दोनों नेताओं ने राजनीतिक और रणनीतिक, सैन्य और सुरक्षा, व्यापार और निवेश, ऊर्जा, विज्ञान और तकनीक, न्यूक्लियर, स्पेस, संस्कृति, शिक्षा और मानवीय सहयोग समेत कोऑपरेशन के सभी क्षेत्र में फैले कई तरह के आपसी फायदे वाले भारत-रूस संबंधों का सकारात्मक मूल्यांकन किया। राष्ट्रपति पुतिन और पीएम मोदी ने संतुलित और सस्टेनेबल तरीके से द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने के अपने कॉमन एम्बिशन को फिर से कन्फर्म किया, जिसमें रूस को भारत का एक्सपोर्ट बढ़ाना, औद्योगिक सहयोग को मजबूत करना, नई तकनीक और निवेश साझेदारी बनाना, खासकर उच्च स्तरीय तकनीकी क्षेत्र में और अधिक सहयोग के नए रास्ते और तरीके ढूंढना शामिल है। उन्होंने 2030 तक भारत-रूस आर्थिक सहयोग के रणनीतिक क्षेत्र के विकास के लिए प्रोग्राम 2030 को अपनाने का स्वागत किया।

अब चीन के दुश्मन के साथ रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की इमरजेंसी मीटिंग

दैनिक कारखाने का सफर।
एजेंसी नई दिल्ली

कहते हैं कि दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है। बता दें कि भारत ने इसी फार्मूले पर चलते हुए चीन को उसी के इलाके में घेरना शुरू कर दिया है। जिस चीन ने पाकिस्तान को आगे करके भारत पर दबाव बनाने की कोशिश की। साजिश रची। अब भारत भी ड्रैगन के खिलाफ एक ऐसा ही चक्रव्यूह तैयार कर रहा है जिसने बीजिंग की नींद उड़ा दी है। भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह आपको बता दें कि इस वक्त वियतनाम में है लेकिन यह कोई साधारण विदेश यात्रा नहीं है। यह वो चाल है भारत की जिसने चीन को अंदर तक हिला कर रख दिया है। क्योंकि इस बार भारत सिर्फ बयान नहीं दे रहा बल्कि चीन की सबसे बड़ी कमजोरी पर सीधा वार कर रहा है। अटैक कर रहा है। दरअसल आपको बता दें कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह वियतनाम की राजधानी हनोई पहुंचे। जहां रक्षा साझेदारी, समुद्री सुरक्षा और बड़े हथियार सौदों पर बातचीत हुई है। सबसे ज्यादा चर्चा ब्रह्मोस मिसाइल को लेकर इस वक्त वहां पर हो रही है। यह कयास सामने आए हैं। वियतनाम लंबे समय से भारत की इस सुपरसोनिक मिसाइल को खरीदना चाहता है। इसके अलावा आपको यह भी बता दें कि आकाश एयर डिफेंस सिस्टम और पिनाका रॉकेट सिस्टम पर भी चर्चा काफी तेज है।
दक्षिण चीन सागर यानी वो समुद्री इलाका जहां से दुनिया के करीब 30% व्यापार गुजरता है। अरबों डॉलर का तेल, गैस और इंटरनेशनल सप्लाई इसी रास्ते से जाती है और इसी वजह से बीजिंग चिंता में है और चीन यह चाहता है कि इस पूरे इलाके पर सिर्फ उसी का ही कंट्रोल हो। लेकिन चीन वहां कृत्रिम द्वीप बना रहा है। मिसाइल सिस्टम तैनात कर रहा है और छोटे देशों को डराकर अपना दबदबा कायम रखना चाहता है जो उसकी पुरानी रणनीति है। लेकिन अब भारत ने चीन के इसी खेल में सबसे बड़ा ट्विस्ट लाकर रख दिया है। भारत अब सिर्फ हिमालय में चीन को रोकने की रणनीति नहीं चल रहा है। बल्कि आपको बता दें कि समुद्र में भी ड्रैगन को घेरने की तैयारी भारत ने पूरी कर ली है और इस पूरे मिशन में वियतनाम सबसे अहम देश बन गया है। क्यों? इसका कारण आपको बता देते हैं। बता दें कि वियतनाम वो देश है जिसने इतिहास में चीन के सामने झुकने से इंकार कर दिया था। 1979 में दोनों देशों के बीच युद्ध तक हुआ था। आज भी वियतनाम दक्षिण चीन सागर में चीन की हर चाल का खुलकर सामने आकर विरोध करता है।
चीन आज बाहर से जितना ताकतवर दिखता है, अंदर से चाइना उतना ही दबाव में है। उसकी आबादी बूढ़ी होती जा रही है। युवा वर्क फोर्स लगातार घट रही है। दुनिया की कंपनियां चीन छोड़कर दूसरे देशों में इस वक्त जा रही है और यह कई सारी रिपोर्ट्स में दावा किया गया और यहीं पर वियतनाम चीन के लिए सबसे बड़ा खतरा बनकर उभरा है। करीब बता दें कि रिपोर्ट्स के मुताबिक 10 करोड़ आबादी वाला वियतनाम तेजी से नया मैन्युफैक्चरिंग हब बन रहा है। युवा आबादी है। सस्ता लेबर है। मजबूत समुद्री लोकेशन है। और सबसे बड़ी बात चीन के खिलाफ खुला स्टैंड है वियतनाम का। यानी भारत ने चीन को वहीं घेरना शुरू किया है जहां उसे सबसे ज्यादा दर्द होता है।
भारत अब सिर्फ सीमा पर सैनिक खड़े नहीं कर रहा है बल्कि चीन की सप्लाई चेन, उसकी समुद्री ताकत और उसके एशियाई दबदबे को सरेआम चुनौती देने वाला पूरा नेटवर्क यहां पर भारत के द्वारा तैयार किया जा रहा है। फिलीपींस को ब्रह्मोस दिया। इंडोनेशिया के साथ रक्षा साझेदारी की और अब वियतनाम के साथ बड़ा रक्षा गठजोड़। यानी चीन को चारों तरफ धीरे-धीरे एक ऐसा सुरक्षा घेरा चीन की तरफ बना लिया है भारत ने जो आने वाले समय में ड्रैगन की सबसे बड़ी परेशानी बन सकता है और यही वजह है कि राजनाथ सिंह ने हनोई में भारत की मजबूत अर्थव्यवस्था और इसी के साथ-साथ बढ़ते एफडीआई का भी जिक्र किया है। उन्होंने यह साफ कहा है राजनाथ सिंह ने कि वैश्विक संकट और तेल तनाव के बावजूद भारत मजबूती से खड़ा है।
कोरिया की चार दिवसीय यात्रा पर रवाना हुए राजनाथ सिंह रणनीति पूरी तरीके से तैयार है। यह सिर्फ आर्थिक बयान नहीं था बल्कि दुनिया को दिया गया एक साफ संदेश था कि अब एशिया में चीन का विकल्प तैयार हो चुका है और उसका नाम है भारत और अगर वियतनाम को ब्रह्मोस मिसाइल मिल जाती है भारत द्वारा तो दक्षिण चीन सागर में चीन के युद्धपोतों की मुश्किलें कई गुना ज्यादा बढ़ जाएगी क्योंकि ब्रह्मोस इतनी तेज मिसाइल है कि दुश्मन को संभलने का मौका तक नहीं मिलता है। यह मिसाइल इतनी खतरनाक है पाकिस्तान से पूछ लीजिए। यानी ये साफ है कि भारत अब सिर्फ जवाब नहीं दे रहा बल्कि चीन के पूरे एशियाई खेल को पलटने की तैयारी पहले ही कर चुका है और उस पर काम अब किया जा रहा है और यही वजह है कि राजनाथ सिंह का यह दौरा बीजिंग के लिए सिर्फ एक विदेश यात्रा नहीं है बल्कि आने वाले बड़े भू राजनीतिक तूफान का एक साफ संकेत भी इसे माना जा रहा है।

बीएचईएल भोपाल के मानव संसाधन विकास केन्द्र में नव-नियुक्त आर्टीजन के लिए ओरिएंटेशन मॉड्यूल का शुभारंभ

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बीएचईएल भोपाल के मानव संसाधन विकास केन्द्र में नव-नियुक्त आर्टीजन हेतु प्रवीण ट्रेनिंग मैनुअल के अंतर्गत दिनांक 19.05.2026 से 01.06.2026 तक आयोजित 12 दिवसीय AM2 ओरिएंटेशन मॉड्यूल का शुभारंभ टी. यू. सिंह, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया।
इस अवसर पर आरिफ अहमद सिद्दीकी, अपर महाप्रबंधक (एचआरडी) एवं सुरेखा बंछोर, अपर महाप्रबंधक (एचआरएम) भी उपस्थित रहीं।
कार्यक्रम के प्रारंभ में एचआरडी विभागाध्यक्ष आरिफ अहमद सिद्दीकी ने सभी प्रतिभागियों को प्रवीण ट्रेनिंग मैनुअल की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हुए 300 दिवसीय प्रशिक्षण को पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण के साथ सम्पन्न करने हेतु मार्गदर्शन दिया।
बीएचईएल की प्रगति एवं ऑर्डर निष्पादन में नव-नियुक्त कामगारों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालते हुए सुरेखा बंछोर ने प्रशिक्षण की उपयोगिता साझा की तथा प्रतिभागियों को प्रशिक्षण से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।
महाप्रबंधक (मानव संसाधन) टी. यू. सिंह ने नव-नियुक्त आर्टीजन प्रतिभागियों से संवाद स्थापित करते हुए आश्वस्त किया कि नव नियुक्त कामगारों की समस्याओं के समाधान हेतु वे एवं उनकी टीम सदैव उपलब्ध रहेंगे। उनका संबोधन

अनुशासन, कौशल विकास एवं बहु-कौशल (इंटर ट्रेड स्किल) सीखने की आवश्यकता पर केंद्रित रहा। उन्होंने कहा कि वर्तमान चुनौतीपूर्ण व्यावसायिक परिवेश में नवीन तकनीकों एवं विविध कौशलों को अपनाना समय की आवश्यकता है।
कार्यक्रम के दौरान बीएचईएल भोपाल एचआरडी वर्कशॉप टीम द्वारा हिंदी में रूपांतरित प्रवीण ट्रेनिंग मैनुअल का विमोचन भी टी. यू. सिंह द्वारा किया गया तथा इसे कामगार प्रशिक्षुओं को वितरित किया गया। इस पहल से बीएचईएल भोपाल के सभी नव-नियुक्त आर्टीजन हिंदी भाषा में तैयार प्रशिक्षण सामग्री को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे एवं उसका समुचित लाभ प्राप्त कर सकेंगे।
कीर्ति सिंह, प्रबंधक (एचआरडी) द्वारा 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा तैयार की गई। कार्यक्रम का संचालन मोहम्मद अतीक खान, उप अभियंता द्वारा किया गया। संचालन व्यवस्था में संजय कुमार शर्मा, उप अभियंता (एचआरडी) एवं निखिल भारद्वाज का विशेष सहयोग रहा।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबरः 9826035849, 9425006706

गतांक से आगेः लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

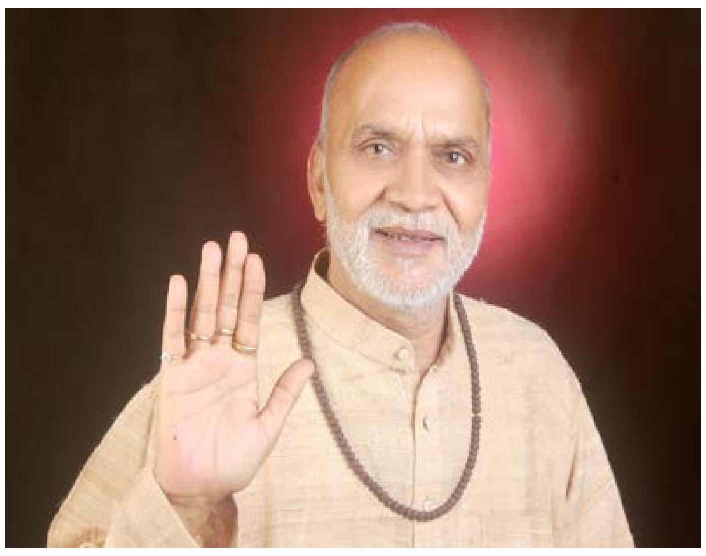

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दादाजी गुरुदेव से संबंधित अनेक चमत्कारिक एवं प्रेरणादायी घटनाएँ क्षेत्र में समय-समय पर घटित होती रहीं। इन दिव्य प्रसंगों ने केवल सामान्य जनमानस को ही नहीं, बल्कि देश-विदेश की अनेक प्रतिष्ठित हस्तियों को भी गहराई से प्रभावित किया। दादाजी के सानिध्य में प्राप्त अनुभूतियाँ श्रद्धा, विश्वास और भक्ति की ऐसी अमिट छाप छोड़ती हैं, जो साधक के जीवन को भीतर तक आलोकित कर देती हैं। दादाजी गुरुदेव के बाल्यकाल के साथी एवं घनिष्ठ मित्र श्री ज्वाला प्रसाद नामदेव बताते हैं कि उनका जन्म ग्राम बुहानी, साईंखेड़ा (गाडरवारा) के समीप हुआ था। बचपन से ही उनका दादाजी गुरुदेव श्री चुन्नीलाल नामदेव जी के साथ अत्यंत आत्मीय संबंध रहा। वे स्मरण करते हुए कहते हैं कि बाल्यावस्था में दोनों मित्रों ने साथ खेलते-कूदते हुए अनेक मधुर क्षण बिताए। गर्मी की छुट्टियों में कभी दादाजी गुरुदेव उनके घर बुहानी आ जाते थे, तो कभी वे स्वयं साईंखेड़ा पहुँच जाते थे। श्री ज्वाला प्रसाद नामदेव भावुक होकर बताते हैं कि साईंखेड़ा की पावन दूधी नदी के तट पर दोनों मित्र घंटों खेला करते थे। नदी की स्वच्छ रेत पर कबड्डी, दौड़ एवं अन्य पारंपरिक खेलों के माध्यम से बाल्यकाल की निश्छल मित्रता और आत्मीयता का अद्भुत वातावरण निर्मित होता था। उस समय किसी को यह अनुमान नहीं था कि सरल, शांत और सहज स्वभाव वाले चुन्नीलाल नामदेव आगे चलकर लोककल्याण एवं जनसेवा के लिए समर्पित दिव्य संत स्वरूप में प्रतिष्ठित होंगे। वे बताते हैं कि दादाजी गुरुदेव बचपन से ही अत्यंत करुणामय, सहृदय और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के थे। उनके व्यवहार में विनम्रता, सेवा भावना और सभी के प्रति समान प्रेम सहज रूप से दिखाई देता था। गाँव के बुजुर्गों का सम्मान करना, जरूरतमंदों की सहायता करना तथा धार्मिक वातावरण में विशेष रुचि लेना उनके स्वभाव का अभिन्न अंग था। यही कारण था कि बाल्यकाल से ही लोग उनके व्यक्तित्व में एक विशेष दिव्यता का अनुभव करने लगे थे। समय के साथ दादाजी गुरुदेव का आध्यात्मिक तेज और लोकसेवा का संकल्प निरंतर बढ़ता गया। आज भी उनके जीवन से जुड़ी स्मृतियाँ, चमत्कारिक घटनाएँ और दिव्य अनुभूतियाँ हजारों श्रद्धालुओं के लिए प्रेरणा एवं आस्था का केंद्र बनी हुई हैं। श्री ज्वाला प्रसाद नामदेव कहते हैं कि दादाजी के साथ बिताए गए वे बाल्यकाल के क्षण आज भी उनके हृदय में सजीव हैं और उन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि उन्होंने दादाजी गुरुदेव के सरल मानवीय स्वरूप से लेकर दिव्य आध्यात्मिक व्यक्तित्व तक की यात्रा को निकट से देखा।

-श्री ज्वाला प्रसाद नामदेव राष्ट्रीय नामदेव समाज विकास परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष

एमपी के मेडिकल स्टोर्स आज बंद रहेंगे भोपाल में 3 हजार दुकानों पर असर, दवा की ऑनलाइन बिक्री का विरोध

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्य प्रदेश में आज यानी 20 मई को दवा दुकानों की हड़ताल रहेगी। भोपाल में 3 हजार से ज्यादा मेडिकल स्टोर बंद रहेंगे। ऑल इंडिया ऑर्गनाइजेशन ऑफ केमिस्ट्स एंड ड्रगिस्ट्स (AIOCD) ने ऑनलाइन दवा बिक्री के विरोध में यह बंद बुलाया है। भोपाल केमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष जितेंद्र धाकड़ ने बताया कि जिले के सभी रिटेल और थोक दवा व्यवसायी इस बंद का समर्थन करेंगे और 20 मई को अपनी दुकानें बंद रखेंगे। एसोसिएशन का कहना है कि यह मुद्दा सीधे आम लोगों की सेहत से जुड़ा है। घर-घर पहुंच रही ऑनलाइन दवाओं की गुणवत्ता और निगरानी को लेकर अभी स्पष्ट सिस्टम नहीं है, जो गंभीर चिंता का विषय है।

एसोसिएशन के अध्यक्ष धाकड़ ने बताया कि ऑनलाइन दवा व्यापार की आड़ में नकली, एक्सपायरी एवं गलत दवाओं के वितरण की संभावनाएं बढ़ रही हैं, जिससे मरीजों की जान जोखिम में पड़ सकती है। उन्होंने भोपाल की जनता से इस बंद के कारण होने वाली असुविधा के लिए खेद व्यक्त किया है तथा नागरिकों से अपील की है कि वे 20 मई से पूर्व ही अपनी नियमित उपयोग की आवश्यक दवाओं का संग्रह कर लें। साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि अस्पतालों के अंदर संचालित मेडिकल स्टोर्स को इस बंद से मुक्त रखा गया है, ताकि मरीजों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

ये हैं प्रमुख मांगें ऑनलाइन दवा बिक्री पर सख्त नियंत्रण कॉरपोरेट कंपनियों द्वारा भारी डिस्काउंट पर रोक नकली और बिना निगरानी वाली दवाओं पर कार्रवाई हृदय, शुगर या बीपी के मरीज हैं तो बरतें सावधानी जिन घरों में बुजुर्ग, हृदय रोगी, शुगर या बीपी के नियमित मरीज हैं, वे अपनी जरूरी दवाओं की अग्रिम व्यवस्था 19 मई तक अनिवार्य रूप से कर लें। ताकि 20 मई को होने वाले पूर्ण बंद के दौरान किसी भी अप्रिय स्थिति से बचा जा सके।

अपेक्स बैंक के प्रशासक महेन्द्र सिंह यादव व्दारा *''ईंधन बचाओ-उर्जा बचाओ''*की अपील

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

प्रशासक महेन्द्र सिंह यादव व्दारा वर्तमान में चल रहे वैश्विक उर्जा संकट के परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व्दारा राष्ट्र हित में नागरिकों से किये गये विनम्र अनुरोध का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री, म.प्र.शासन मोहन यादव के निर्देशन में सहकारिता एवं कृषि क्षेत्र से जुडे समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से ''ईंधन बचाओ-उर्जा बचाओ''*की अपील की गई एवं साथ ही स्थानीय उत्पा्दों को बढावा देने हेतु *''वोकल फॉर लोकल'' अभियान को सशक्त बनाने का संदेश दिया गया । इसी प्रकार '' एक पेड मां के नाम'' वृक्षारोपण अभियान को भी जिला बैंक मुख्यालय सहित पैक्स स्तर पर पौधारोपण के लक्ष्य पूर्ण कर पूरा करने हेतु आव्हान किया गया, जिससे '' हरित सहकार अभियान'' सहकारी समितियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण एवं ग्रामीण विकास का एक प्रभावी मॉडल बने सके । बैठक में प्रशासक महेन्द्रोसिंह व्दारा बी-पैक्स संस्थाओं की वर्ष 2026-27 वित्तीय वर्ष समाप्ति पर आयोजित होने वाली वार्षिक आमसभा में चयनित न्यूनतम 10 सदस्य किसानों को सम्मानित किये जाने हेतु सुझाव दिया गया । बैठक में विषयवार समीक्षा करते हुए महेन्द्रसिंह के निर्देशन में प्रबंध संचालक मनोज कुमार गुप्ता व्दारा पैक्स् के माध्य म से उज्जैन संभाग में चलाये जा रहे सदस्यनता महाभियान की जानकारी की समीक्षा की गई, जिसमें उज्जैन जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक व्दारा सदस्यता अभियान में किये जा रहे प्रयासों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उधृत किया कि जिला बैंक उज्जैन व्दारा पूरे म.प्र. में सर्वाधिक अंशपूंजी लगभग 50लाख अब तक जमा की जा चुकी है । यदयपि यह निर्धारित अपेक्षित लक्ष्य से कम है तथापि पूरे मध्यप्रदेश में सर्वाधिक है । इस हेतु सभी जिला बैंकों को लक्ष्य पूर्ण करने के निर्देश दिये गये । इसी प्रकार वर्ष 2025-26 में वितरित अल्पावधि फसल ऋण के विरूध्द सर्वाधिक वसूली पूरे संभाग में जिला बैंक देवास व्दारा की गई है । इस हेतु सभी बैंकों को निर्देश दिये गये कि वे अधिक से अधिक वसूली करें जिससे जिला बैंकों की वित्तीय स्थिति सुदढ हो । इसी प्रकार ऋण वितरण भी अधिक से अधिक किये जाने के निर्देश दिये गये जिससे जिला बैंकों के साथ-साथ पैक्स के व्यवसाय में अधिक से अधिक वृध्दि हो । समीक्षा के दौरान यह पाया गया कि टर्म लोन वितरण के प्रति अधिकांश जिला बैंकों का रूख उदासीन है, व्यवसाय बढोतरी के लिये यह आवश्ययक है कि जिला बैंकें अलग-अलग उददेश्यों के लिये भी ऋण वितरण करें, जिससे समाज के अधिक से अधिक लोग लाभांवित हो सकें । पैक्स अंतर्गत विभिन्न् व्यवसायिक गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा करते हुए यह पाया गया कि अभी इस क्षेत्र में और अधिक प्रयास अपेक्षित हैं, जिससे पैक्स को सुदृढ किये जाने हेतु किये जा रहे प्रयासों को पूर्ण सफलता मिल सके । वित्ती य वर्ष 2026-27 हेतु जिला बैंकों को अमानत संग्रहण के आबंटित लक्ष्यों के प्रति कुछ जिला बैंकों व्दा रा 100 प्रतिशत से अधिक लक्ष्य प्राप्त किया है, जो प्रशंसनीय है, जबकि कुछ जिला बैंकों व्दारा अपेक्षित 100 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सका है । जिला बैंकों को यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि कासा अमानतें बैंकों की वित्तीय सेहत के लिये अत्यन्त आवश्य क हैं, अतः इनके अधिक से अधिक संग्रहण पर ध्यांन दिया जाना चाहिये । वर्तमान में गेहूं उपार्जन का कार्य चल रहा है, जिला बैंकें यह सुनिश्चित करें कि यह कार्य सुचारू रूप से एक लय में चले, ईपीओ पेंडिंग न रहें और शतप्रतिशत उपार्जित काश्त का परिवहन हो जाए, जिससे बाद में संस्थाओं को किसी भी प्रकार की अनपेक्षित हानि न वहन करना पडे । बैठक के अंत में संभागीय शाखा प्रबंधक शैलेन्द्र रावत व्दारा आभार प्रदर्शन उपरांत समीक्षा बैठक समाप्त घोषित की गई। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित, उज्जैन के सभाकक्ष में अपेक्स बैंक, भोपाल के नवमनोनीत अध्यक्ष/प्रशासक महेन्द्र सिंह यादव की अध्यक्षता में उज्जैन संभाग के जिला सहकारी केन्द्रीय बैंकों के मुख्यकार्यपालन अधिकारियों की एक महत्वयपूर्ण समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया । बैठक में मनोज कुमार गुप्ता, प्रबंध संचालक अपेक्स बैंक, भोपाल एवं प्रशासक, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित उज्जैन भी मुख्य रूप से उपस्थित रहे । समीक्षा बैठक में शैलेन्द्र रावत, संभागीय शाखाप्रबंधक, अपेक्स बैंक, शाखा-भरतपुरी उज्जैन, विशेष श्रीवास्तव, मुख्यकार्यपालन अधिकारी, जिला सहकारी केन्द्री य बैंक मर्यादित उज्जैन के साथ-साथ संभाग के जिला बैंक देवास, रतलाम, शाजापुर, मंदसौर, नीमच एवं आगर-मालवा के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों एवं अभय प्रधान, ओएसडी प्रशासक, अपेक्स बैंक व्दारा भी भाग लिया गया । इसके पूर्व दिन में भोपाल से देवास पहुंच कर देवास जिला बैंक की विभिन्न सोसाइटियों एवं जिला बैंक का भी भ्रमण किया।

भेल भोपाल में नवनिर्मित अत्याधुनिक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (VC) प्रणालियों का आधिकारिक तौर पर उद्घाटन किया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

पी. के. उपाध्याय, कार्यपालक निदेशक, भेल भोपाल ने महाप्रबंधकों, डीआरओ (DROs) और विभागाध्यक्षों (HODs) की उपस्थिति में भेल भोपाल में नवनिर्मित अत्याधुनिक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (VC) प्रणालियों का आधिकारिक तौर पर उद्घाटन किया।

इन वीसी प्रणालियों को पीसी-आधारित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सिस्टम के लिए कॉर्पोरेट-व्यापी दर अनुबंध (Rate Contract) के तहत लागू किया गया है, जिसमें डीटीजी (DTG) भोपाल ने भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड की सभी इकाइयों के लिए मुख्य खरीद एजेंसी (LPA) के रूप में कार्य किया है।

विभिन्न भेल इकाइयों, क्षेत्रों और परियोजना स्थलों पर कुल 174 वीसी कक्षों को सफलतापूर्वक स्थापित किया गया है। भेल भोपाल में 7 उन्नत वीसी प्रणालियाँ चालू की गई हैं, जिनमें 5 अपग्रेड (प्रतिस्थापित) किए गए वीसी कक्ष और डीटीजी कॉन्फ्रेंस हॉल तथा विकास हॉल में 2 नवनिर्मित उच्च क्षमता वाली वीसी सुविधाएं शामिल हैं।

दर अनुबंध (Rate Contract) के पूरे जीवनचक्र को डीटीजी विभाग, भेल भोपाल द्वारा कुशलतापूर्वक प्रबंधित किया गया था—जिसके अंतर्गत इकाइयों में आवश्यकताओं का एकीकरण, तकनीकी विशिष्टताओं को अंतिम रूप देना, बजट निर्धारण, अनुमोदन, जीईएम (GeM) के माध्यम से निविदा प्रक्रिया और एल1 (L1) बोलीदाता को एलओआई (LOI) जारी करना शामिल है।

इस कार्यान्वयन को डीटीजी टीम द्वारा पूरा किया गया, जिसमें संजीव कुमार (प्रबंधक), संजीव लुगुन (वरिष्ठ प्रबंधक) और सतीश असनानी (वरिष्ठ डीजीएम) शामिल थे, जिन्हें एन. पी. सनोदिया (एजीएम एवं विभागाध्यक्ष) और विवेक पाठक (एजीएम) का सहयोग प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त, इस दर अनुबंध के तहत क्लाउड-आधारित वीसी प्लेटफॉर्म के 953 लाइसेंस खरीदे गए हैं, जिसमें भेल भोपाल के लिए 80 लाइसेंस शामिल हैं, जो पूरे उद्यम में निर्बाध संचार को सक्षम बनाते हैं। ये नए तैनात किए गए पीसी-आधारित वीसी सिस्टम उन्नत, क्लाउड-रेडी सुविधाओं से लैस हैं, जो ज़ूम (Zoom), माइक्रोसॉफ्ट टीम्स (Microsoft Teams) और सिस्को वेबेक्स (Cisco Webex) जैसे प्लेटफॉर्म के साथ सहज अनुकूलता प्रदान करते हैं। यह समाधान एमसीयू (MCU) जैसे अतिरिक्त हार्डवेयर की आवश्यकता को समाप्त करता है, उच्च स्केलेबिलिटी सुनिश्चित करता है, लचीले मल्टी-स्क्रीन कॉन्फ़िगरेशन का समर्थन करता है, और भौगोलिक रूप से दूर-दराज के स्थानों के बीच बेहतर सहयोग को सक्षम बनाता है। यह उद्घाटन डिजिटल संचार बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और भेल में डिजिटल परिवर्तन पहलों को गति देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सीआईएसएफ ने दरभंगा हवाई अड्डे पर सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाली, जिससे उत्तरी बिहार में विमानन सुरक्षा को बढ़ावा मिला

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

दरभंगा, बिहार | 14 मई 2026 - दरभंगा हवाई अड्डे की सुरक्षा जिम्मेदारी केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) को सौंपे जाने के उपलक्ष्य में आज हवाई अड्डे परिसर में एक औपचारिक समारोह आयोजित किया गया। यह उत्तरी बिहार में विमानन सुरक्षा और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की सुरक्षा को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस जिम्मेदारी के साथ, दरभंगा देश का 72वां और पटना और गया के बाद बिहार का तीसरा हवाई अड्डा बन गया है जो सीआईएसएफ की सुरक्षा में शामिल हुआ है।

इस दीक्षांत समारोह में बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी, दरभंगा के सांसद श्री गोपाल जी ठाकुर, बिहार सरकार के मुख्य सचिव श्री प्रत्यय अमृत, सीआईएसएफ के महानिदेशक श्री प्रवीर रंजन, बिहार के पुलिस महानिदेशक श्री विनय कुमार आईपीएस, सीआईएसएफ की अतिरिक्त महानिदेशक (एयरपोर्ट सेक्टर) श्रीमती बिनिता ठाकुर (आईपीएस), एयरपोर्ट सेक्टर (पूर्वी एवं उत्तर-पूर्वी) की उप महानिरीक्षक श्रीमती किम (आईपीएस) सहित जन प्रतिनिधियों, राज्य प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों, नागरिक उड्डयन क्षेत्र और सुरक्षा एजेंसियों के अधिकारियों ने भाग लिया। हवाई अड्डे पर विशेषीकृत, प्रौद्योगिकी-आधारित विमानन सुरक्षा प्रदान करने के लिए कुल 145 सीआईएसएफ कर्मियों को तैनात किया गया है। 729 किलोमीटर लंबी भारत-नेपाल सीमा के निकट दरभंगा की स्थिति और सीमावर्ती क्षेत्रों में ड्रोन देखे जाने सहित अंतरराष्ट्रीय खतरों, तस्करी नेटवर्क और उभरती सुरक्षा चुनौतियों से संबंधित बढ़ती चिंताओं के कारण यह तैनाती रणनीतिक महत्व रखती है।

दरभंगा हवाई अड्डा भारतीय वायु सेना स्टेशन के भीतर एक नागरिक एन्क्लेव के रूप में संचालित होता है, जो उच्च प्रशिक्षित और विशिष्ट विमानन सुरक्षा बल की आवश्यकता को और भी रेखांकित करता है। सीआईएसएफ एक व्यापक बहुस्तरीय सुरक्षा ढांचा प्रदान करेगा जिसमें उन्नत यात्री और सामान की जांच, तोड़फोड़ रोधी जांच, निगरानी प्रणाली, पहुंच नियंत्रण उपाय और त्वरित प्रतिक्रिया तंत्र शामिल होंगे। आधुनिक सुरक्षा खतरों के खिलाफ तैयारियों को मजबूत करने के लिए त्वरित प्रतिक्रिया दल (क्यूआरटी), बम निरोधक दस्ते (बीडीएस) और विस्फोटक का पता लगाने में प्रशिक्षित के9 डॉग दस्ते सहित विशेष इकाइयों को भी तैनात किया गया है।भारत सरकार की उड़ान योजना के अंतर्गत दरभंगा हवाई अड्डा सबसे तेजी से विकसित होने वाले हवाई अड्डों में से एक बनकर उभरा है। इसने उत्तरी बिहार के लिए क्षेत्रीय हवाई संपर्क में उल्लेखनीय सुधार किया है और नेपाल सीमा से इसकी निकटता राष्ट्र के लिए इसके रणनीतिक महत्व को रेखांकित करती है। पिछले कुछ वर्षों में हवाई अड्डे पर यात्री यातायात में तीव्र वृद्धि देखी गई है, जो क्षेत्र के आर्थिक और सामाजिक विकास में इसके बढ़ते महत्व को उजागर करती है।

सभा को संबोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने क्षेत्र के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए कहा, "सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं किया जाएगा। मिथिला क्षेत्र अत्यंत संवेदनशील है, और सीआईएसएफ की तैनाती से हमारे नागरिकों को एक मजबूत सुरक्षा कवच प्राप्त होगा।"

सीआईएसएफ के महानिदेशक श्री प्रवीर रंजन ने कहा कि सीआईएसएफ पेशेवर कर्मचारियों, उन्नत प्रौद्योगिकी और विश्व स्तर पर मानकीकृत सुरक्षा प्रथाओं के माध्यम से सुरक्षित, संरक्षित और यात्री-अनुकूल हवाई अड्डे का वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

दरभंगा में तैनाती के साथ, सीआईएसएफ अब बिहार में 11 महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों को सुरक्षित कर रही है, जिनमें प्रमुख औद्योगिक इकाइयां और हवाई अड्डे शामिल हैं, जिससे राज्य भर में महत्वपूर्ण राष्ट्रीय बुनियादी ढांचे की सुरक्षा में बल की भूमिका और मजबूत हो रही है।

दादाजी धाम मंदिर में तीसरे बड़ा मंगल पर विशेष पूजन, हनुमान चालीसा पाठ एवं दीपदान सम्पन्न

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जागृत एवं दर्शनीय तीर्थ स्थल दादाजी धाम मंदिर, रायसेन रोड, पटेल नगर, भोपाल में ज्येष्ठ मास के तीसरे बड़ा मंगल एवं पुरुषोत्तम मास के पावन अवसर पर सायंकाल विशेष धार्मिक आयोजन श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर भगवान श्री हनुमान जी की विशेष पूजन-अर्चना, सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ एवं महाआरती आयोजित की गई। भक्तों ने भजन-कीर्तन, मंत्र जाप एवं दीपदान कर संपूर्ण वातावरण को भक्तिमय एवं आलोकित बना दिया। पुरुषोत्तम मास के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि यह माह भगवान श्री विष्णु जी की आराधना, जप-तप, दान एवं सत्कर्मों के लिए अत्यंत पुण्यदायी माना गया है। मंदिर में भगवान विष्णु जी की विधिवत पूजा-अर्चना भी सम्पन्न हुई तथा प्रतिदिन नियमित रूप से धार्मिक अनुष्ठान जारी हैं। मंदिर के पुजारी पंडित राजेंद्र जी द्वारा श्रद्धालुओं को विधिपूर्वक पूजन कराया गया। बड़ी संख्या में उपस्थित भक्तों ने दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त किया।

उज्जैन में मेडिकल संचालकों की कल हड़ताल

एक हजार मेडिकल स्टोर बंद रहेंगे, आज

दैनिक कारखाने का सफर। उज्जैन

उज्जैन सहित देशभर में कल बुधवार को मेडिकल दुकानें बंद रहेंगी। अखिल भारतीय केमिस्ट संघ (एआईओसीडी) के आह्वान पर जिले के करीब 1000 से अधिक मेडिकल संचालक अपनी दुकानें बंद रखेंगे, जिससे आम लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। जिला केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन (यूडीसीडीए) ने अखिल भारतीय केमिस्ट संघ (एआईओसीडी) के आह्वान पर 20 मई 2026, बुधवार को उज्जैन में पूर्ण दवा बंद की घोषणा की है। यह बंद अवैध ई-फार्मेसी की अनियंत्रित कार्यप्रणाली और कॉर्पोरेट घरानों द्वारा दी जा रही 'डीप डिस्काउंटिंग' (भारी छूट) के विरोध में किया जा रहा है। बिना भौतिक सत्यापन बेच रहे दवाएं एसोसिएशन का आरोप है कि अवैध ई-फार्मेसी और भारी छूट के कारण देश के 5 करोड़ आश्रितों की आजीविका पर संकट आ गया है। उनका दावा है कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म नियमों में ढील का

फायदा उठाकर बिना भौतिक सत्यापन के दवाएं बेच रहे हैं। इससे न केवल नकली दवाओं की बिक्री बढ़ रही है, बल्कि आदतन दवाओं की अनियंत्रित उपलब्धता और एंटी-माइक्रोबियल रेजिस्टेंस (एएमआर) जैसे बड़े खतरे भी पैदा हो रहे हैं। यह सीधे तौर पर जनस्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है। आज वाली हड़ताल को देखते हुए जरूरी दवाएं लोग आज ही अपने पास की मेडिकल दुकानों से ले सकते हैं। हालांकि, इमरजेंसी की स्थिति में अस्पतालों में संचालित मेडिकल स्टोर से दवाएं मिल सकेंगी। अस्पतालों के मेडिकल स्टोर को हड़ताल से दूर रखा है।

संग्रहालय केवल वस्तुओं का संग्रह नहीं करते बल्कि हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं -राजेश भट्ट

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

'संग्रहालय सिर्फ पुरानी वस्तुओं का संग्रह ही नहीं बल्कि हमें अपनी जड़ों एवं विरासत से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य भी करते हैं |' यह उदगार हैं राजेश भट्ट सूचना आयुक्त मध्य प्रदेश शासन के जो दुष्यंत कुमार संग्रहालय द्वारा आयोजित दो दिवसीय विश्व संग्रहालय दिवस में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे | इस आयोजन में -'जनजातीय संग्रहालय का लोकार्पण किसने किया था ,अजायबघर के नाम से कौन सा संग्रहालय जाना जाता है, भारत भवन के वास्तुकार कौन थे ,दुष्यंत संग्रहालय की स्थापना किस सन् में हुई थी जैसे रोचक और महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे गये दुष्यन्त कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में |इस प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का संचालन किया श्रीमती सुधा दुबे ने ।

विभाजित विश्व को एकजुट करने में संग्रहालय की भूमिका वर्ष 2026 की इस थीम पर आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्षता की एम.एम. उपाध्याय सेवानिवृत्त अपर मुख्य सचिव मध्य प्रदेश शासन ,विशिष्ट अतिथि थे सुभाष अत्रे पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं पुरातत्ववेत्ता। इस अवसर पर तीनों ही मंचासीन अतिथियों ने संग्रहालय के महत्व पर प्रकाश डाला श्री सुभाष अत्रे जिनके पास गणेश प्रतिमाओं का अद्भुत कलेक्शन है ने संग्रहालय की शुरुआत को लेकर अपना व्याख्यान दिया ।उन्होंने बताया कि भारत में सबसे पहले संग्रहालय की शुरुआत कोलकाता में हुई थी तथा भारत में इस समय लगभग दो सौ अस्सी संग्रहालय है।राजेश भट्ट ने आकाशवाणी के संग्रह को लेकर अपनी बात करते हुए कहा कि भारत में दिल्ली और भोपाल ही दो ऐसे स्थान हैं जहां दो ऐसी तिजोरियां है जिनमें देश के प्रमुख संगीतकारों , साहित्यकारों, राजनेताओं और अन्य

महत्वपूर्ण अवसरों पर दिए गए भाषणों और कार्यक्रमों का संग्रह रखा गया है। उन्होंने बताया कि इस तिजोरी किसी भी मौसम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और इसके दस्तावेज सुरक्षित रहते हैं। यह तिजोरी तीन लोगों के पास रखी चाबियों को एक साथ लगाने पर ही खुलती है। दिल्ली में इसकी मूल प्रतियां सुरक्षित है जबकि दूसरी कॉपी भोपाल में।उन्होने बताया भोपाल को भौगोलिक सुरक्षा की दृष्टि से चुना गया है।आयोजन के अध्यक्ष श्री एम एम उपाध्याय ने संग्रहालय को लेकर भी महत्वपूर्ण बात करते हुए कहा कि वास्तव में देखा जाए तो हर घर संग्रहालय है। एक बार मैंने प्रयोग के तौर पर एक स्कूल के बच्चों से कहा कि वे अपने घर से कुछ पुरानी सामग्री लेकर आए जिसकी प्रदर्शनी लगाई जाएगी और मैंने देखा कि बच्चें अपने घर से अपने पूर्वजों की याद में रखी गई सामग्री लेकर आए और हमारा यह प्रयोग अत्यंत सफल रहा।

इस अवसर पर संग्रहालय द्वारा बनाए गए पांच समूहों में 6-6 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय समूह का नेतृत्व श्रीमती अनीता सक्सेना,राज्य संग्रहालय समूह का नेतृत्व देवेंद्र तिवारी, जनजातीय संग्रहालय समूह का नेतृत्व डॉक्टर प्रतिभा द्विवेदी ,दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय का नेतृत्व वी के श्रीवास्तव और माधवराव सप्रे संग्रहालय एवं शोध संस्थान का नेतृत्व किया डॉ कल्पना वर्मा ने। इन सभी समूह से पूछे गए प्रश्नों के आधार पर प्रथम स्थान प्राप्त हुआ दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय को, द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ राज्य संग्रहालय को और तृतीय स्थान प्राप्त हुआ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय को। इन सभी को क्रमशः 2100, 1100 और 700 रुपए की सम्मान निधि के साथ-साथ प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए ।कार्यक्रम के प्रथम सत्र का संचालन सुरेश पटवा ने एवं द्वितीय सत्र का संचालन घनश्याम मैथिल अमृत ने किया।कार्यक्रम के अंत में आभार व्यक्त किया संग्रहालय के अध्यक्ष रामराव वामनकर ने जबकि स्वागतबोधन किया संग्रहालय की सचिव करुणा राजुरकर ने।

इस अवसर पर विशेष रूप से संग्रहालय के पूर्व अध्यक्ष श्री अशोक निर्मल, उपाध्यक्ष श्री मनोज मीट, राजेंद्र गट्टानी ,श्री आलोक त्यागी, विनय उपाध्याय ,रमेश भुमरकर,आशीष राठौर, विशाखा राजुरकर, सुनील भट्ट, गोपाल सिंह ठाकुरऔर अन्य साहित्यकार भी दर्शक दीर्घा में उपस्थित थे।

नेपाल से भोपाल पहुंची मेडिकल इमरजेंसी फ्लाइट,राजा भोज एयरपोर्ट पर बना ग्रीन कॉरिडोर, गंभीर मरीज को तुरंत इलाज के लिए भेजा गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजा भोज एयरपोर्ट पर मंगलवार शाम नेपाल से आई एक अंतरराष्ट्रीय मेडिकल फ्लाइट को प्राथमिकता के आधार पर सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं। यह फ्लाइट श्री एयरलाइंस द्वारा संचालित थी, जो शाम 4:30 बजे पोखरा से भोपाल पहुंची।

गंभीर हालत में लाया गया मरीज, बिना देरी पूरी हुई प्रक्रिया फ्लाइट के जरिए भोपाल निवासी एक गंभीर मरीज को आपातकालीन चिकित्सा जरूरत के तहत लाया गया। मरीज की स्थिति को देखते हुए एयरपोर्ट प्रशासन ने इमिग्रेशन और कस्टम क्लियरेंस सहित सभी औपचारिकताएं रिकॉर्ड समय में पूरी कराईं। संबंधित एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल के चलते मरीज को बिना किसी देरी के अस्पताल के लिए रवाना किया गया।

फ्लाइट के जरिए भोपाल निवासी एक गंभीर मरीज को आपातकालीन चिकित्सा जरूरत के तहत लाया गया। H24 सुविधा और ICP का मिला लाभ एयरपोर्ट प्रशासन के मुताबिक, राजा भोज एयरपोर्ट 24x7 (H24) संचालित होने वाला एयरपोर्ट है और यह एक अधिसूचित इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट (ICP) भी है। इसी कारण अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए जरूरी इमिग्रेशन और कस्टम सुविधाएं यहां पहले से उपलब्ध हैं, जिसका फायदा इस मेडिकल इमरजेंसी में मिला। दो घंटे में पूरी प्रक्रिया, फ्लाइट लौटी नेपाल सभी आवश्यक प्रक्रियाएं पूरी होने के बाद श्री एयरलाइंस का विमान शाम 6:00 बजे वापस नेपाल के लिए रवाना हो गया। इस दौरान एयरपोर्ट प्रशासन, मेडिकल टीम, एयरलाइन स्टाफ और ग्राउंड हैंडलिंग एजेंसियों ने मिलकर पूरी प्रक्रिया को सुचारू बनाया।

मरीज की स्थिति को देखते हुए एयरपोर्ट प्रशासन ने इमिग्रेशन और कस्टम क्लियरेंस सहित सभी औपचारिकताएं रिकॉर्ड समय में पूरी कराईं। मानवीय परिस्थितियों में तत्परता का भरोसा एयरपोर्ट प्रबंधन ने स्पष्ट किया कि आपातकालीन और मानवीय परिस्थितियों में यात्रियों को हर संभव मदद देना उनकी प्राथमिकता है। बेहतर समन्वय और त्वरित कार्रवाई के जरिए भविष्य में भी ऐसी सेवाएं जारी रहेंगी।

उपजाऊ भूमि का विनाश क्यों!

अणुबम से भी घातक कैमिकल्स, कीटनाशक दवाएं, रासायनिक खाद व जहरीली दवाओं के अमर्यादित प्रयोग से भूमि बंजर बन रही हैं। साथ ही साथ उद्योगों से निकला प्रदूषित जल वाष्पित होकर ऊपर जाता है। फिर प्रदूषित एवं क्षारीय जल की वर्षा से भूमि पूर्णतया बंजर बन रही है। इसी प्रकार इन दवाओं का प्रयोग होता रहा तो अगले 50 वर्षों में सारे देशवासी भयानक रोगों से ग्रस्त जाएंगे। एक तरफ तो हम बढ़ती आबादी का रोना रोते हैं। दूसरी तरफ हम अपनी खेती योग्य जमीन को दैत्यों की तरह बर्बाद कर रहे हैं। इस आत्मघाती विकास से हम अपने भविष्य के लिए भीषण खाद्य संकट पैदा होने के हालात बना रहे हैं। यूं तो आजादी के बाद देश में कृषि, ग्रामीण विकास व जल संसाधन जैसे मंत्रालय बने, जिनके मंत्री और अफसर विदेशों में ज्ञान लेने के बहाने भागते रहे। पर क्या वजह है कि इन सबके होते हुए भी देश में कुल 33 करोड़ हेक्टेयर की तिहाई भूमि बंजर है और लगातार बढ़ रही है। जैसे गोबी मरुस्थल से उड़ी धूल उत्तर चीन से लेकर कोरिया के उपजाऊ मैदानों को ढक रही है, उसी तरह थार मरुस्थल की रेत उत्तर भारत के उपजाऊ मैदानों को निगल रही है। अरावली पर्वत काफी हद तक धूल भरी आंधियों को रोकने का काम करता है, लेकिन अंधाधुंध खनन की वजह से इस पर्वतमाला को नुकसान पहुंच रहा है, जिससे यह धूल भरी आंधियों को पूरी तरह नहीं रोक पा रही है। उधर हर साल 84 लाख टन भूमि के पोषक तत्व बाढ़ आदि की वजह से बह जाते हैं। कीटनाशक भी हर साल 1.4 करोड़ वर्ग किमी भूमि की उर्वरकता खत्म कर रहे हैं। इसी तरह लवणीयता और क्षारपन भी हर साल 270 हजार वर्ग किमी क्षेत्र को बंजर बना रहे हैं। अणुबम से भी घातक कैमिकल्स, कीटनाशक दवाएं, रासायनिक खाद व जहरीली दवाओं के अमर्यादित प्रयोग से भूमि बंजर बन रही हैं। साथ ही साथ उद्योगों से निकला प्रदूषित जल वाष्पित होकर ऊपर जाता है। फिर प्रदूषित एवं क्षारीय जल की वर्षा से भूमि पूर्णतया बंजर बन रही है। इसी प्रकार इन दवाओं का प्रयोग होता रहा तो अगले 50 वर्षों में सारे देशवासी भयानक रोगों से ग्रस्त जाएंगे। हाल के वर्षों में औद्योगिक कचरे से भी भूमि और जल प्रदूषण की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। उद्योगों से निकले कचरे और प्रदूषित जल को नदियों में छोड़े जाने से भूतलीय और भूमिगत जल प्रदूषित हो गया है। इस तरह के प्रदूषित जल का सिंचाई के लिए इस्तेमाल किए जाने से जमीन भी खराब हो गई है। ताजा अनुमानों के अनुसार इस सबसे 34,500 हेक्टेयर भूमि बुरी तरह प्रभावित हुई है। इसके साथ ही भारी मात्रा में पॉलीथिन और प्लास्टिक का कचरा पृथ्वी की उर्वरकता को तेजी से खत्म कर रहा है, क्योंकि यह कचरा गलता नहीं है। इसलिए यह जमीन के लिए बहुत ही घातक है। जिस पर पूरी तरह प्रतिबंध लगना चाहिए, लेकिन न तो केंद्र सरकार ऐसा कर पा रही हैं और न राज्य सरकारें। जमीन में बोरिंग करके अंधाधुंध पानी खींचने से पृथ्वी के भीतर भूजल स्तर में तेजी से गिरावट आई है। जिससे जमीन की नमी खत्म हुई है और रेगिस्तान बढ़ता जा रहा है। फिर भी हमें अकल नहीं आ रही। 1947 में देश में एक हजार ट्यूबवेल थे, जिनकी तादाद अब 2.10 करोड़ से भी अधिक है और हर पा बढ़ती जा रही है। इससे भूमिगत पानी की सतह तेजी से नीचे होती जा रही है। इसी तरह औद्योगीकरण के इस दौर में समुद्री तटों के आसपास मनुष्यों के रहने लायक स्थिति नहीं बची है। क्योंकि आए दिन समुद्री पानी से भूमि का कटाव होकर खारा पानी आबादी क्षेत्र में 30 से 100 किमी तक प्रवेश करने लगा है। गुजरात के जामनगर, द्वारिका, जूनागढ़, भावनगर और अमरैली के तटीय गांव उजड़ने की कगार पर हैं। जिसका एक मात्र कारण तटीय जमीन का अत्यधिक कटाव किया जाना है। इतना ही नहीं बल्कि देश में हो रहे बेरोकटोक अंधाधुंध खनन से जमीन पोली हो रही है। भूचाल के खतरे बढ़ रहे हैं और इससे होने वाले प्रदूषण से भूमि बंजर हो रही है। खानों का कचरा खुले में फैलने से व सीमेंट उद्योग के लिए चूना-पत्थर और चीनी मिट्टी उद्योग के लिए कैल्साइट और खड़िया पत्थर की पिसाई से जो धूल उड़ती है, वह आसपास की उपजाऊ जमीन को बर्बाद कर देती है। नब्बे फीसदी खान मालिकों द्वारा खुली खदान प्रणाली के जरिये खनन कार्य किया जा रहा है। खनन पूरा हो जाने के बाद उस क्षेत्र को ऐसे ही छोड़ दिया जाता है। इसे फिर सही करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया जाता। जिससे पूरा क्षेत्र हमेशा के लिए बर्बाद होकर रेगिस्तान बन जाता है। वनस्पतियों का विनाश भी जमीन को बंजर बनाने का कारण है। मरुस्थलीयकरण का सबसे पहला शिकार पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ होती हैं। जमीन पर बढ़ते दबाव से पेड़-पौधों और वनस्पतियों के ह्रास में खतरनाक वृद्धि हो रही है। गाँवों के आस-पास चरागाहों की जमीन बुरी तरह बर्बाद हुई है, क्योंकि उसकी सबसे अधिक उपेक्षा और सबसे ज्यादा दोहन हुआ है। इस प्रकार उपजाऊ भूमि भी रेगिस्तान बनती जा रहे है।

हमारे देश के प्रधानमंत्रियों को भारत के किसानों और उनकी जमीनों की गिरती उर्वरकता की गहरी चिंता रही है। ऐसा वे अपने वक्तव्यों से संकेत देते रहे हैं, लेकिन अभी तक इस समस्या का कोई ठोस समाधान भारत की कोई भी सरकार आजादी के बाद से नहीं दे पाई है। नतीजतन, यह विनाश बेरोकटोक जारी है। खेतों में अंधाधुंध रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग भूजल में फ्लोराइड और आर्सेनिक की मात्रा खतरनाक स्तर तक बढ़ा चुका है। जिसका मानवीय स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। सबको सबकुछ मालूम है। पर कोई कुछ ठोस नहीं करता। ऐसे में इस विकट समस्या पर प्रधानमंत्री और उनके संबंधित मंत्रालयों को गंभीरता से सोचना चाहिए और कृषि योग्य भूमि के संरक्षण को प्रोत्साहित करते हुए उसका विनाश करने वालों से कड़ाई से निपटना चाहिए।

-विनीत नारायण

समावेशी विकास में भागीदारी का सवाल!

महिला अधिकारों और उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व के दावों तथा उसकी वास्तविकता के मध्य एक गहरा विरोधाभास है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि डा आंबेडकर महिलाओं की उन्नति के प्रबल पक्षधर थे। पढ़िए अर्चना कुमारी का लेख...

भारत में महिलाएं देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। जब भी हम महिलाओं की समानता की बात करते हैं, तो यह भूल जाते हैं कि किसी भी वर्ग में समानता के लिए सबसे पहले अवसरों का बराबर होना बेहद जरूरी है। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि देश की राजनीति में महिलाओं की भूमिका अभी भी हाशिये पर है। यह स्थिति तब है, जबकि महिलाओं ने, राजनीति में जब भी मौका मिला, अपनी योग्यता और क्षमताओं का लोहा मनवाया है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि आजादी के 75 वर्षों में लैंगिक समानता की दिशा में हासिल की गई उपलब्धियां आखिर गिनती की ही क्यों रह गई हैं? सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस असमानता की खाई को अब तक क्यों नहीं भरा जा सका है? इसमें कोई दोराय नहीं है कि स्त्री शक्ति ने देश-दुनिया में समय-समय पर अपनी प्रतिभा का बेहतर प्रदर्शन किया है। मगर महिलाओं को कमतर होने का अहसास दिलाने की पुरुष वर्ग की मानसिकता आज भी उन्हें उनके हक से वंचित कर रही है। नारी सशक्तीकरण की बातें कागजी योजनाओं में काफी अच्छी लगती हैं, पर धरातल पर अभी काफी कुछ होना बाकी है। खासतौर से देश की आधी आबादी को लोकतांत्रिक व्यवस्था में बराबरी का हक देने को लेकर।

महिलाओं को 33% आरक्षण की मांग आज भी अधूरी इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि विधायिका में महिलाओं के लिए पचास फीसद नहीं, बल्कि महज तैंतीस फीसद आरक्षण की मांग आज भी अधूरी है। पंचायत और स्थानीय निकाय स्तर पर आरक्षण से महिलाओं को प्रतिनिधित्व का मौका जरूर मिला, लेकिन यहां भी उनका कितना सशक्तीकरण हो पाया है, यह किसी से छिपा नहीं है। शिक्षित, आर्थिक रूप से स्वावलंबी और ऊंचे पदों पर बैठी महिलाओं के विपरीत लैंगिक भेदभाव की उस तस्वीर को भी देखना होगा, जहां महिलाओं को यह भी पता नहीं कि कानून ने किन-किन क्षेत्रों में उन्हें कितना संरक्षित कर रखा है। संसद में भी पुरुषों के मुकाबले महिलाओं का प्रतिनिधित्व बहुत कम है। वर्ष 2024 के संसदीय चुनावों के बाद महिला सांसदों का प्रतिनिधित्व मात्र चौदह फीसद ही है, इसीलिए उन पर दायित्व और प्रतिनिधित्व का भार निर्वाचित पुरुष सांसदों से कहीं अधिक है।

देश की मौजूदा जनसंख्या के अनुसार, लोकसभा में एक निर्वाचित सांसद औसतन 26 लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि एक निर्वाचित महिला सांसद औसतन 92 लाख महिलाओं का प्रतिनिधित्व करतीं है। ऐसे में निर्वाचित महिला सांसदों का राजनीतिक दायित्व भी कहीं अधिक है। जाहिर है, महिला अधिकारों और उनके राजनीतिक प्रतिनिधित्व के दावों तथा उसकी वास्तविकता के मध्य एक गहरा विरोधाभास है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि डा आंबेडकर महिलाओं की उन्नति के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि किसी भी समाज का मूल्यांकन इस बात से किया जाता है कि उसमें महिलाओं की क्या स्थिति है।

'महिलाओं के समुचित विकास के बिना देश का चहुंमुखी विकास संभव नहीं' दुनिया की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है, इसलिए जब तक उनका समुचित विकास नहीं होता, कोई भी देश चहुंमुखी विकास नहीं कर सकता। डा आंबेडकर का मानना था कि सही मायने में प्रजातंत्र तब आएगा, जब महिलाओं को पैतृक संपत्ति में बराबरी का हिस्सा मिलेगा, उन्हें पुरुषों के समान अधिकार दिए जाएंगे और घर-परिवार एवं समाज में बराबरी का दर्जा मिलेगा।

यह सच है कि शिक्षा और आर्थिक तरक्की महिलाओं को सामाजिक बराबरी दिलाने में मदद करेगी। मगर इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि देश में पितृसत्तात्मक मानदंडों और परंपरागत मानसिकता के कारण महिलाओं को हाशिये पर रखा गया। आजादी के बाद देश के संविधान ने यह व्यवस्था दी कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में पुरुषों एवं महिलाओं के साथ समान व्यवहार किया जाएगा, लेकिन अधिकांश राज्य विधानसभाओं में महिला सदस्यों के प्रतिनिधित्व का परिदृश्य आज भी निराशाजनक है। वास्तव में देश की आधी आबादी का एक बहुत बड़ा हिस्सा अभी भी अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित है। विश्व आर्थिक मंच की 'ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स-2022' की रिपोर्ट में भारत का नाम 146 देशों की सूची में 135वें स्थान पर रहा है। यह भी सच है कि भारत समेत अनेक देशों में आज भी महिलाएं अपने अधिकारों को लेकर जागरूक नहीं हैं। लिंगभेद का शिकार सबसे ज्यादा आज भी महिलाएं ही हैं। कई परिवारों में लड़कियों को इस दौर में भी पढ़ाई से दूर रखा जाता है। जो महिलाएं घर-परिवार के प्रोत्साहन और संघर्ष से किसी तरह आगे निकल जाती हैं, उन्हें कभी पदोन्नति में बाधा, तो कभी कार्यस्थल पर उत्पीड़न झेलना पड़ता है। इसके अलावा देश में महिलाओं के कुपोषण का आंकड़ा भी हैरान करने वाला है।

महिलाओं को सिर्फ वोट बैंक न समझा जाए आज जरूरत इस बात की है कि महिलाओं को सिर्फ वोट बैंक न समझा जाए। महिला सशक्तीकरण के नाम पर उन्हें हर महीने चंद रुपए की आर्थिक मदद देने से वे सही मायनों में सशक्त नहीं हो पाएंगी। कायदे से महिलाओं को हर क्षेत्र में प्राथमिकता दी जानी चाहिए और उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना होगा। यह तभी संभव होगा, जब महिलाओं की राजनीति में हिस्सेदारी बढ़ेगी और उनसे जुड़े मसलों पर विचार-विमर्श के बाद नीत निर्माण होगा।

देश में महिलाओं की सुरक्षा का सवाल भी अहम है। आज स्थिति यह है कि महिलाएं घर और बाहर कहीं भी सुरक्षित नहीं हैं। महिलाओं के प्रति अपराध के मामले साल-दर-साल बढ़ रहे हैं। ऐसा भी नहीं है कि महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों पर रोक लगाने के लिए कानून नहीं बनाए गए हैं, मगर उनका प्रभावी अनुपालन नहीं हो पा रहा है। नतीजतन पीड़ित महिलाओं को न्याय के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ता है। इसके बाद भी यह निश्चित नहीं होता है कि उन्हें सही मायने में न्याय मिल पाएगा या नहीं। ऐसे में महिलाएं अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने से भी कतराती हैं। इस स्थिति को हर हाल में बदलना होगा।

महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़े जाने की जरूरत दरअसल, महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़े जाने की जरूरत है। देश की राजनीति से लेकर रोजगार के मामले में महिलाओं की भागीदारी कम होने के पीछे प्रमुख कारण अब तक समाज में पितृसत्तात्मक ढांचे का मौजूद होना है। महिलाओं के प्रतिनिधित्व के मुद्दों पर राजनीतिक वर्ग का भेदभावपूर्ण रवैया चिंताजनक है। इसलिए यह अनिवार्य हो जाता है कि विभिन्न स्तर पर महिलाओं की हिस्सेदारी का विश्लेषण किया जाए, ताकि यह पता लगाया जा सके कि समाज में आज भी कितनी असमानता है और इसे कैसे दूर किया जा सकता है।

अगर संसद से इस असमानता को समाप्त करने की शुरुआत की जाए, तो संभवतः यह देश के लिए एक बड़ा संदेश होगा और साथ ही महिला सशक्तीकरण की दिशा में बड़ी पहल साबित होगी। हमें इस बात को समझना होगा कि पुरुषों और महिलाओं की समान भागीदारी न केवल न्याय और लोकतंत्र के लिए अहम है, बल्कि यह सुव्यवस्थित मानव अस्तित्व के लिए भी अनिवार्य है। जाहिर है, शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य तक और प्रशासन से लेकर राजनीति तक महिलाओं को अभी व्यापक अवसर तथा सुविधाएं देना बाकी है। यह काम सरकारों को भी करना होगा और समाज को भी।

गहराती जा रही आशंकाएं

ईरान युद्ध पर सारा ध्यान केंद्रित करना उचित नहीं होगा। चालू खाता घाटे में क्यों रहा और भारत में निवेश में फायदा दिखना क्यों बंद हुआ, यह असल सवाल है, जिस पर अवश्य विचार होना चाहिए।

रुपये की कीमत प्रति डॉलर 100 रुपये तक गिरने की आशंका अब सघन हो गई है। इसकी वजह देश के पूंजी खाते का घाटा बढ़ता जाना है। चालू खाता (आयात और निर्यात का अंतर) तो लगातार ही घाटे में था। मगर पूंजीगत खाते (विदेशी निवेश) की बेहतर सेहत और विदेशों से भारतीयों द्वारा भेजे जाने वाली विदेश मुद्रा की अच्छी स्थिति के कारण 2024 तक भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियादी कमजोरियों पर परदा पड़ा रहा। 2025 में आकर ये कहानी पलटनी शुरू हो गई, जब विदेशी निवेशकों ने भारतीय बाजारों से 20 बिलियन डॉलर की रकम निकाल ली। 2026 में अब तक वे 26 बिलियन डॉलर और निकाल चुके हैं।

इसी बीच भारतीय पूंजीपतियों ने विदेश में निवेश बढ़ा दिया है। एक अमेरिकी विज्ञप्ति के मुताबिक हाल में निवेशकों के एक सम्मेलन में भारतीय पूंजीपतियों ने अमेरिका में 20.5 बिलियन डॉलर के निवेश का एलान किया। उधर ईरान युद्ध के कारण खाड़ी देशों में काम करने वाले भारतीयों द्वारा भेजी जाने वाली रकम में भी बड़ी गिरावट आई है। नतीजा देश में घबराहट फैलना है। नरेंद्र मोदी सरकार ने इस स्थिति का पूरा दोष ईरान युद्ध के बने हालात डाला है, लेकिन वह पूरी हकीकत नहीं है। इस जंग ने पहले से बिगड़ रही हालत को बदतर भर बनाया है। असल मुद्दा यह है कि निवेशक पहले से पैसा क्यों निकाल रहे थे और भारतीय पूंजीपति देश में निवेश क्यों नहीं कर रहे हैं?

जहां तक विदेशी संस्थागत निवेशकों का प्रश्न है, तो वे किसी दीर्घकालिक वादे के साथ कहीं नहीं जाते। जहां तुरंत मुनाफा दिखता है, उड़ कर वहां पहुंच जाते हैं। फिलहाल, अमेरिका में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के फूलते बबूले ने उन्हें आकर्षित किया है। फिर उपभोग ना बढ़ने तथा रुपये की कीमत में क्रमिक गिरावट के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर उम्मीदें लगातार कमजोर पड़ी हैं। इसी कारण भारतीय पूंजीपतियों ने भी विदेश का रुख किया है। अतः युद्ध पर सारा ध्यान केंद्रित करना उचित नहीं होगा। चालू खाता घाटे में क्यों रहा और भारत में निवेश में फायदा दिखना क्यों बंद हुआ, यह असल सवाल है, जिस पर विचार होना चाहिए।

भारत की विविधता से दूर होती नई पीढ़ी!

मैक्समूलर ने 1882 में अपने भाषणों की श्रृंखला में बताया था कि 'भारतः हमें क्या सिखा सकता है', तो एलएम बाशम ने 'द वंडर दैट वाज इंडिया' (आश्चर्यजनक, जो भारत था) के द्वारा हमें वह बताया, जो दक्कन से पाटलिपुत्र तक था। उन पुस्तकों को पढ़ना हमारे लिए बौद्धिक विलासिता है, तो एनसीईआरटी की पुस्तकें पढ़ना अनिवार्यता है। अपने समाज या राष्ट्र को हम कितना जानते हैं? पिछले डेढ़ सौ वर्षों से भारत के अभिप्राय पर चर्चा, विवाद और टकराव चल रहा है। इसमें रवींद्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी और डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की परिभाषाएं हैं, तो दूसरी ओर संसद में इस पर होने वाली बहस भी शामिल है। पर यह अपूर्ण है। इसका कारण दूसरे प्रश्न में छिपा है। 'हम भारत को कितना जानने का प्रयास करते हैं?' समाजशास्त्र और इतिहास के पाठ्यक्रम, जिन पर 'विशेषज्ञों' द्वारा अनगिनत बार पुनर्विचार हुआ है, भारत की सही तस्वीर दे पाने में असमर्थ हैं। यही वजह है कि पीढ़ियों के लिए ये पुस्तकें परीक्षाओं में अंक लाने तक सीमित हैं। हर पुनर्विचार थोड़ा राजनीतिक विवाद जरूर पैदा करता है, जो हमें सूचित करता है कि भारत के इतिहास, विरासत और विविधता के बारे में विपरीत विचार अभी भी मुखर हैं। यूरोप के विद्वानों को 'भारत की खोज' प्रेरित और उद्वेलित करती है, पर यह हमें नहीं कर पाती है। मैक्समूलर ने 1882 में अपने भाषणों की श्रृंखला में बताया था कि 'भारतः हमें क्या सिखा सकता है', तो एलएम बाशम ने 'द वंडर दैट वाज इंडिया' (आश्चर्यजनक, जो भारत था) के द्वारा हमें वह बताया, जो दक्कन से पाटलिपुत्र तक था। उन पुस्तकों को पढ़ना हमारे लिए बौद्धिक विलासिता है, तो एनसीईआरटी की पुस्तकें पढ़ना अनिवार्यता है। इन दोनों से अलग अपने परिवेश, परंपरा, विरासत को ढूंढ़ना, उससे साक्षात्कार करना और उस बुनियाद पर अपने आपको विकसित करना एक सभ्यताई दायित्व भी है। इसका हमने परित्याग कर दिया है। बीसवीं शताब्दी का एक संक्षिप्त कालखंड था, जब भारत की खोज में लोग लगे थे। वह भारत की कला, पत्रकारिता, राजनेताओं के भाषण और साहित्यकारों की लेखनी द्वारा जनसामान्य तक पहुंचता था। इसमें लोकमान्य तिलक के 'केसरी' से महर्षि अरविंद का 'वंदे मातरम्' अखबार और बिपिनचंद्र पाल का 'सोल आफ इंडिया' से लेकर

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी का 'सोमनाथ' उपन्यास शामिल है। पर भारत की व्यापकता उसकी जीवन पद्धतियों में है। वे भिन्न तो दिखती हैं, पर उनमें स्वर एक है। इसी विविधता को जानने और समझने में अपनी स्वैच्छिक अज्ञानता को हमने आगे कर रखा है। 1882 से लेकर 1941 तक साम्राज्यवादी शासन के दौरान हुई जनगणना में भारत को जानने, समझने का प्रयास हुआ, जो अब नहीं हो रहा है। उदाहरण के तौर पर 1911 और 1921 की जनगणना में सामाजिक परंपराओं, त्योहारों और रीति-रिवाजों में समुदायों की परस्पर साझेदारी का विस्तृत वर्णन है। इसी में पंजाब की 'पंचपीरिया परंपरा', बंगाल का 'फिरंगी काली मंदिर' और मद्रास का डुडेकुला समुदाय आदि हैं। वर्ष 1891 की जनगणना रिपोर्ट ने गिब्बन को उद्धृत किया कि 'एक हजार उपवनों और हजार नदियों के देवी-देवता अपने स्थानीय और विशिष्ट प्रभावों में शांतिपूर्वक प्रतिष्ठित थे। (भारत के) प्राचीनकाल में इतनी उदार भावना और समन्वय की प्रवृत्तियां थीं कि राष्ट्र अपने धार्मिक और पूजा पद्धतियों के बीच भेदों की अपेक्षा उनकी समानताओं पर अधिक जोर देता था।' यह भारत की रचनात्मक विविधता है। वह पहचान की कट्टरता और प्रतिद्वंद्विता, दोनों से मुक्त है। इसी को उभारते हुए 1931 में संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के जनगणना अधीक्षक एसी टर्नर ने भारत में धर्म के वैशिष्ट्य को उभारा था, 'पश्चिम में धर्म का अर्थ ईश्वर, परलोक आदि विचारों और अलौकिक शक्तियों से है, तो भारत में धर्म सामाजिक क्षेत्र के संपूर्ण आचरण को समाहित करता है।' भारत की श्रेष्ठता को स्वीकार करने में इन रपटों में थोड़ी भी हिचकिचाहट नहीं थी। इसीलिए 1931 के जनगणना आयुक्त जेएच हट्टन ने भारत के धार्मिक मेलों की महत्ता, प्रकार, प्रभाव और प्रचंड स्वरूप के सामने यूरोप के सभी ऐसे मेलों को नगण्य माना था। 'धार्मिक तीर्थयात्राएं भारतीय जीवन में किसी भी अन्य राष्ट्र की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्व निभाती हैं। यहां तक कि 'सेंट जेम्स आफ काम्पोस्टेला' की अत्यंत प्राचीन यात्राएं और लूर्डे की गुफा तक की आधुनिक यात्राएं भी इलाहाबाद के कुंभ की तुलना में नगण्य प्रतीत होती हैं।' वे हमारी इसी विशिष्टता को देख रहे थे, जिसमें विविधता के बीच समन्वय था। वर्ष 2020 में मैंने जब संसद में मेघालय के कोंगथोंग की चर्चा की, जहां स्वर उच्चारण से लोग एक-दूसरे को पहचानते और बुलाते हैं, तो आश्चर्य हुआ। मेघालय का केंद्रीय विश्वविद्यालय भी इससे अनभिज्ञ था। ठीक वैसे, जैसे अरुणाचल के दिबांग घाटी में अनिनी गांव की इदु मिश्मी जनजाति के लोगों की मान्यताओं, परंपराओं के बारे में स्वतंत्र भारत का समाज अज्ञानी बना हुआ है। विश्वविद्यालय अपने आसपास की संस्कृतियों, परंपराओं को प्रसारित करने का माध्यम हो सकते हैं। इसके लिए 'स्थानीयता' अध्ययन केंद्र एक अच्छा उपक्रम हो सकता है। पर्यावरण संरक्षण का उदाहरण भी देश के अनेक हिस्सों में है। इसे मेघालय में खासी जयंतिया के लोग 'ला लिंगडोह' कहते हैं। पश्चिम खासी (मेघालय) में 78 एकड़ में मवफलांग पवित्र वन है, जिसमें कोई एक पत्ता भी तोड़ नहीं सकता। कर्नाटक के शिमोगा में मुत्तर, आंध्र के श्रीकुरमन, सोलापुर के शेटफल गांव जैसे तमाम उदाहरण हैं, जो आश्चर्य में डालने वाली परंपराओं के जीवंत उदाहरण हैं। आधुनिकता और नवउदारवाद ने हमें 'अच्छे मकान', 'अच्छे वेतन', 'अच्छे वस्त्र' और 'अच्छे भोजन' तक सीमित कर दिया है। पर यह विनाशकारी है। यह मानव मन की उत्कंठा को मारता है, रचनात्मकता को दबाता है और भौतिकता को बढ़ाता है। इसका परिणाम आना शुरू हो गया है। मशीन से उत्पादित वस्तुओं की तरह मनुष्य एकरूपता में नहीं रह सकता, लेकिन लुधियाना से लद्दाख तक माल और क्लब की संस्कृति ने हमें ऐसा ही बना दिया है। संस्कृति और समाज स्थिरता में नहीं रहते हैं। सतत परिवर्तन इसका स्वभाव है। इसी परिवर्तन का सारथी बनने की क्षमता, लालसा और उत्कंठा को उभारना ही हमारी विरासत और भविष्य को जोड़ सकेगा।

प्रधानमंत्री मोदी की नॉर्वे यात्रा से पूरी दुनिया में मची हलचल, भारत की ताकत देखकर दंग रह गए यूरोपीय देश

एजेंसी तेहरान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नॉर्वे यात्रा ने भारत और नॉर्वे के संबंधों में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। ओस्लो में दोनों देशों ने अपने रिश्तों को "हरित रणनीतिक साझेदारी" के स्तर तक पहुंचाने की घोषणा की। यह कदम स्वच्छ ऊर्जा, हरित प्रौद्योगिकी, समुद्री अर्थव्यवस्था, अनुसंधान, निवेश और व्यापार के क्षेत्रों में दीर्घकालिक सहयोग का आधार भी माना जा रहा है। भारतीय विदेश मंत्रालय के अनुसार इस नई साझेदारी से जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, हरित आपूर्ति श्रृंखला, समुद्री अर्थव्यवस्था और टिकाऊ विकास के क्षेत्रों में सहयोग को रणनीतिक दिशा मिलेगी। नॉर्वे के प्रधानमंत्री योनास गार स्तोरे ने प्रधानमंत्री मोदी के साथ वार्ता के बाद कहा कि भारत और नॉर्वे के बीच मतभेद हो सकते हैं, लेकिन दोनों देशों को उन ताकतों के खिलाफ साथ खड़ा होना होगा जो कूटनीति, व्यापार और प्रौद्योगिकी का "हथियार" की तरह उपयोग करती हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने भी इस यात्रा को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि भारत और नॉर्वे की साझेदारी अब स्वच्छ ऊर्जा, हरित विकास, हरित नौवहन और समुद्री अर्थव्यवस्था जैसे क्षेत्रों में नई ऊंचाइयों तक पहुंचेगी। उन्होंने इसे दोनों देशों के भविष्य के लिए निर्णायक कदम बताया। हम आपको बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी की नॉर्वे यात्रा इसलिए भी ऐतिहासिक मानी जा रही है क्योंकि चार दशक से अधिक समय बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री ने नॉर्वे का दौरा किया है। ऐसे समय में जब भारत पारंपरिक साझेदारों पर निर्भरता कम कर नए आर्थिक सहयोगियों की तलाश कर रहा है, नॉर्वे एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में उभर रहा है। नॉर्वे का सरकारी पेंशन कोष दुनिया के सबसे बड़े संप्रभु निवेश कोषों में गिना जाता है और पिछले कुछ वर्षों में उसने भारतीय बाजारों में निवेश लगातार बढ़ाया है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2016 में भारत में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश के मामले में नॉर्वे का हिस्सा 1.95 प्रतिशत था, जो 2025 तक बढ़कर 3.87 प्रतिशत हो गया। महामारी के बाद प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में भी तेजी आई है। भारत को हाल के वर्षों में नॉर्वे से लगभग 693 मिलियन डॉलर का निवेश प्राप्त हुआ है। व्यापार के स्तर पर भी संबंध मजबूत हो रहे हैं। वित्त वर्ष 2026 में भारत का नॉर्वे को निर्यात बढ़कर लगभग 472 मिलियन डॉलर तक पहुंच गया, जबकि आयात लगभग 635 मिलियन डॉलर रहा। प्रधानमंत्री मोदी की इस यात्रा की सबसे बड़ी उपलब्धियों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग को नया आयाम देना भी शामिल है। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद और वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग ने नॉर्वे में पांच महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इन समझौतों का उद्देश्य स्वच्छ ऊर्जा, समुद्री ऊर्जा, अपतटीय पवन ऊर्जा, कार्बन नियंत्रण, जैव आधारित प्रौद्योगिकी और भू विज्ञान के क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना है। हम आपको यह भी बता दें कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सोमवार को नॉर्वे के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ग्रैंड क्रॉस ऑफ द रॉयल नॉर्वेजियन ऑर्डर ऑफ मेरिट' से सम्मानित किया गया।

मोदी को यह सम्मान भारत-नॉर्वे संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में उनके योगदान और दूरदर्शी नेतृत्व के लिए दिया गया। यह प्रधानमंत्री को मिला 32वां विदेशी सम्मान है। इसके अलावा, भारत और नॉर्वे के अनुसंधान संस्थानों के बीच संयुक्त कार्यशालाओं, अनुसंधान परियोजनाओं और वैज्ञानिक आदान प्रदान की भी योजना बनाई गई है। विशेष रूप से समुद्री ऊर्जा और अपतटीय पवन ऊर्जा पर सहयोग भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को मजबूत करेगा और कार्बन तटस्थता के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा। इसके अतिरिक्त सतत विकास, चक्रीय अर्थव्यवस्था, समुद्री विज्ञान, स्वास्थ्य और आधारभूत ढांचा प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भी साझेदारी बढ़ाने पर सहमति बनी है। प्रधानमंत्री मोदी की नॉर्डिक देशों के नेताओं के साथ बैठकें भी इस दौरे का महत्वपूर्ण हिस्सा रहीं।

उन्होंने आइसलैंड की प्रधानमंत्री क्रिस्ट्रन फ्रॉस्टडॉटिर, फिनलैंड के प्रधानमंत्री पेटेरी ओर्पो और डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिक्सन के साथ अलग अलग वार्ता की। इन बैठकों में व्यापार, नवीकरणीय ऊर्जा, प्रौद्योगिकी और निवेश सहयोग को मजबूत करने पर चर्चा हुई। हम आपको बता दें कि नॉर्डिक देश उत्तरी यूरोप और उत्तरी अटलांटिक का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं, जिनमें डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे और स्वीडन शामिल हैं। इन पांच देशों की संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद क्षमता 1.9 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है और ये नवीकरणीय ऊर्जा तथा सतत समुद्री शासन के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व रखते हैं। साथ ही ओस्लो में आयोजित तीसरा भारत नॉर्डिक शिखर सम्मेलन भारत और इन देशों के बीच प्रौद्योगिकी, हरित परिवर्तन, रक्षा, अंतरिक्ष, समुद्री अर्थव्यवस्था और आर्कटिक सहयोग को नई दिशा देने वाला साबित हुआ। प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान भारत और यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते पर भी चर्चा तेज हुई है। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला फॉन डेर लेयेन ने भारत और यूरोपीय संघ के बीच निवेश समझौते को "सहयोग की अधूरी कड़ी" बताया। माना जा रहा है कि भारत और यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ के बीच हाल में हुए व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौते से भारत में एक लाख करोड़ डॉलर तक का निवेश आ सकता है और अगले पंद्रह वर्षों में दस लाख रोजगार सृजित हो सकते हैं।म आपको बता दें कि फिनलैंड, आइसलैंड और डेनमार्क के साथ भारत के आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध भी लगातार मजबूत हो रहे हैं। फिनलैंड की सौ से अधिक कंपनियां भारत में कारोबार कर रही हैं, जबकि डेनमार्क की कई कंपनियों ने "मेक इन इंडिया" अभियान के तहत नए कारखाने स्थापित किए हैं। आइसलैंड में भारतीय संस्कृति, योग, संगीत और भारतीय भोजन के प्रति विशेष रुचि देखी जा रही है।

बहरहाल, प्रधानमंत्री मोदी की नॉर्वे और नॉर्डिक देशों की यह यात्रा केवल औपचारिक कूटनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि हरित विकास, निवेश, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैश्विक आर्थिक सहयोग की नई संभावनाओं का संकेत मानी जा रही है। भारत और नॉर्डिक देशों के बीच बढ़ती निकटता आने वाले वर्षों में वैश्विक हरित अर्थव्यवस्था और रणनीतिक साझेदारी के नए मॉडल के रूप में उभर सकती है।

'रूस-चीन रिश्ते दुनिया में स्थिरता लाने वाली शक्ति', पुतिन ने ब्रिक्स की बात कर अमेरिका की बढ़ाई चिंता, भारत बनेगा बड़ी ताकत

एजेंसी बीजिंग

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि रूस और चीन के संबंध दुनिया में 'स्थिरता लाने वाली शक्ति' है। मंगलवार से शुरू होने वाली अपनी दो दिवसीय चीन यात्रा से पहले दिए गए संबोधन में पुतिन ने कहा कि मॉस्को और बीजिंग किसी भी दूसरे देश के खिलाफ गठबंधन नहीं करना चाहते, बल्कि 'शांति और सार्वभौमिक समृद्धि' के लिए मिलकर काम करना चाहते हैं। उन्होंने अपने संबोधन में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) और ब्रिक्स (BRICS) की बात करके यह भी संकेत दे दिया कि रूस और चीन अब अमेरिका के झांसे में नहीं आने वाले हैं। भारत मौजूदा समय में ब्रिक्स का अध्यक्ष है, जिसके साथ रूस और चीन के संबंधों का एक नया आयाम लिखा जा रहा है। बीते साल चीन के तियानजिन में SCO की बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ पुतिन और जिनपिंग की तस्वीर सामने आने पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप परेशान हो गए थे। पुतिन ने कहा-'इसी भावना के साथ मॉस्को और बीजिंग अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों की पूरी तरह से रक्षा करने के लिए मिल-जुलकर प्रयास कर रहे हैं। पुतिन ने आगे कहा कि रूस और चीन संयुक्त राष्ट्र, शंघाई सहयोग संगठन (SCO), ब्रिक्स (BRICS) और अन्य बहुपक्षीय मंचों के ढांचे के भीतर सहयोग का समर्थन करते हैं, जिससे वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है। पुतिन 12-13 सितंबर, 2026 को भारत में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए आएंगे। आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर देख रहे हैं रूस-चीनः पुतिन पुतिन ने कहा कि मॉस्को-बीजिंग संबंध अभूतपूर्व स्तर तक विकसित हो गए हैं और दोनों पक्ष अब संप्रभुता और राष्ट्रीय एकता की रक्षा जैसे मूलभूत मामलों पर एक-दूसरे का समर्थन कर रहे हैं।

पुतिन ने सरकारी मीडिया द्वारा प्रसारित भाषण में कहा, 'रूस और चीन आत्मविश्वास के साथ भविष्य की ओर देख रहे हैं। राजनीति, अर्थव्यवस्था, रक्षा में सक्रिय रूप से सहयोग बढ़ा रहे हैं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान का विस्तार कर रहे हैं और व्यक्तिगत संपर्क को बढ़ावा दे रहे हैं। दरअसल, दोनों राष्ट्रों की भलाई के लिए द्विपक्षीय सहयोग को गहरा करने और वैश्विक विकास को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर हर संभव प्रयास कर रहे हैं।'

पुतिन बुधवार को शी जिनपिंग के साथ बातचीत करेंगे। रूस और चीन UN, SCO, BRICS और दूसरे बहुपक्षीय मंचों के ढांचे के भीतर सहयोग का समर्थन करते हैं, जिससे वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान मिलता है।

अमेरिका को मिल रही है बड़ी चुनौती एक साल से भी कम समय में दोनों नेताओं की यह दूसरी आमने-सामने की बैठक है। यह ऐसे समय में हो रही है जब रूस और चीन विश्व मामलों में अमेरिका की प्रमुख शक्ति के रूप में स्थिति को चुनौती देने में तेजी से एकजुट होते दिख रहे हैं।

पुतिन की यह यात्रा दोनों देशों के बीच सद्भावना और मैत्रीपूर्ण सहयोग संधि की 25वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित की जा रही है। यह यात्रा शी जिनपिंग और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीजिंग में दो दिवसीय शिखर सम्मेलन के समापन के कुछ ही दिनों बाद हो रही है। ट्रंप और जिनपिंग बातचीत फेल हो गई थी! अक्टूबर में दक्षिण कोरिया में हुई वार्ता के बाद ट्रंप और शी जिनपिंग के शिखर सम्मेलन में गर्मजोशी भरी बयानबाजी और भव्यता देखने को मिली, लेकिन व्यापार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ताइवान और अमेरिका-इजरा;ल द्वारा ईरान पर किए जा रहे युद्ध सहित दोनों पक्षों के बीच विवाद के कई मुद्दों पर कोई ठोस समझौता नहीं हो सका।

ऑस्ट्रेलिया के UNSW में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के वरिष्ठ व्याख्याता अलेक्जेंडर कोरोलेव ने कहा-पुतिन और जिनपिंग इस शिखर सम्मेलन का इस्तेमाल अपनी साझेदारी को मजबूत करने के लिए करेंगे। वह भी ऐसे समय में जब दोनों देश रणनीतिक दबावों का सामना कर रहे हैं।

कोरोलेव ने अल जज़ीरा को बताया-रूस के लिए यह दौरा बताता है कि पश्चिमी दबाव के बावजूद उसके पास उच्च स्तरीय राजनीतिक पहुंच और आर्थिक साझेदार मौजूद हैं। वहीं, चीन के लिए यह इस बात की पुष्टि करता है कि रूस के साथ संबंध उसके रणनीतिक वातावरण का एक विश्वसनीय स्तंभ बना हुआ है। उन्होंने कहा-यह दौरा बीजिंग की विदेश नीति की स्वायत्तता और इस तथ्य को भी उजागर करता है कि चीन की विदेश नीति अपने दम पर खड़ी है और दूसरों की प्राथमिकताओं से प्रभावित नहीं होती है।

पुतिन और जिनपिंग अपनी साझेदारी को मजबूत करने के लिए बातचीत करेंगे। वह भी ऐसे समय में जब दोनों देश रणनीतिक दबावों का सामना कर रहे हैं।

अलेक्जेंडर कोरोलेव, ऑस्ट्रेलिया के UNSW में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के वरिष्ठ व्याख्याता

रूस और चीन का कारोबार 245 अरब डॉलर मर्काटोर इंस्टीट्यूट फॉर चाइना स्टडीज के अनुसार, रूस और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2020 से 2024 तक दोगुने से अधिक बढ़कर 245 अरब डॉलर तक पहुंच गया।

रूस मुख्य रूप से चीन को तेल, गैस और कोयले का निर्यात करता है, जो अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के बीच मॉस्को को आर्थिक सहारा प्रदान करता है। वहीं, चीन अपने सहयोगी रूस को मशीनरी, वाहन, विद्युत उपकरण और कपड़े सहित कई तरह के निर्मित सामान की आपूर्ति करता है।

मोदी-पुतिन और जिनपिंग के साथ आने से घबराया अमेरिका सितंबर, 2025 में चीन के तियानजिन में पीएम मोदी, राष्ट्रपति पुतिन और शी जिनपिंग की मुलाकात हुई। तीनों नेताओं के बीच ज्यादा गर्मजोशी दिखाई दी। शंघाई सहयोग संगठन सम्मेलन के दौरान हुई इस मुलाकात को भले ही ऐतिहासिक नहीं कहा जा सकता, लेकिन इसकी अलम अहमियत है।

साझा बयान में भारत और चीन को 'प्रतिद्वंद्वी' की जगह 'विकास में भागीदार' बताया गया था। इस बात पर भी जोर दिया गया था कि मतभेदों को विवाद में नहीं बदलना चाहिए। 2020 की गलवान झड़पों के बाद से चले आ रहे तनाव के बीच स्थिरता और भरोसे का संकेत देने की कोशिश की गई।

तीनों की तस्वीरों से एक बात साफ हो गई कि भारत, रूस और चीन ब्रिक्स को मजबूत बनाना चाहते हैं, जो असैन्य समूह है। 2026 में भारत ब्रिक्स का अध्यक्ष भी है। ट्रंप को डर है कि कहीं ब्रिक्स के मजबूत बनने से अमेरिकी डॉलर का वर्चस्व टूट न जाए, क्योंकि ब्रिक्स देश धीमे ही सही स्थानीय मुद्रा में कारोबार को बढ़ावा देने पर जोर दे रहे हैं। इसका मतलब साफ है कि अकेले अमेरिका को दुनिया का लीडर नहीं समझा जा सकता है।

यूरेनियम संवर्धन ईरान का कानूनी हकः रूस की अमेरिका को दो-टूक, लावरोव ने ट्रंप प्रशासन को जमकर सुनाया

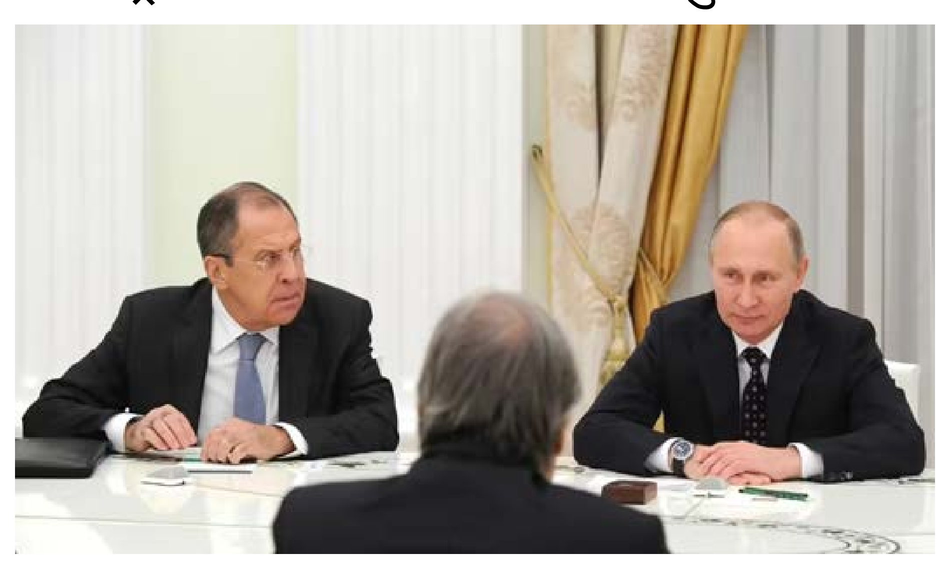

एजेंसी मॉस्को

रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए यूरेनियम संवर्धन करने के ईरान के अधिकार का समर्थन किया है। उन्होंने ट्रंप प्रशासन के ईरान पर डाले जा रहे नए दबाव का विरोध भी किया है। राजनयिक मुलाकातों के दौरान बोलते हुए, लावरोव ने इस बात पर जोर दिया कि ईरान, एक संप्रभु राज्य और परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) का हस्ताक्षरकर्ता होने के नाते, अपने नागरिक परमाणु कार्यक्रम को विकसित करने का वैध अधिकार रखता है। लावरोव ने कहा, "ईरान को शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए यूरेनियम संवर्धन करने का अधिकार है।" रूसी विदेश मंत्री का यह बयान ऐसे समय आया है, जब ट्रंप प्रशासन ने ईरान पर उसके परमाणु गतिविधियों पर अंकुश लगाने और क्षेत्रीय प्रभाव को सीमित करने के लिए राजनयिक और आर्थिक दबाव तेज कर दिया है। अमेरिका ने ईरान के यूरेनियम संवर्धन स्तरों पर बार-बार चिंता व्यक्त की है, जो हाल के वर्षों में 2015 के संयुक्त व्यापक कार्य योजना (जेसीपीओए) के तहत निर्धारित सीमा से काफी ऊपर बढ़ गए हैं, जिससे अमेरिका 2018 में अलग हो गया था। रिपोर्ट के अनुसार, लावरोव का बचाव रूस के उस दीर्घकालिक नीति के अनुरूप है जिसमें वह ईरानी परमाणु मुद्दे के राजनयिक समाधान का समर्थन करता है। रूस हमेशा से ईरान पर एकतरफा प्रतिबंधों एवं सैन्य धमकियों का विरोध करता है। रूस का तर्क रहा है कि ईरान के परमाणु कार्यक्रम का समाधान टकराव के बजाय बहुपक्षीय वार्ताओं के माध्यम से किया जाना चाहिए। ईरान लंबे समय से यह दावा करता रहा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम पूरी तरह से शांतिपूर्ण है और इसका उद्देश्य ऊर्जा उत्पादन और चिकित्सा संबंधी आइसोटोप तैयार करना है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि उन्होंने कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के अनुरोध पर ईरान पर नए हमले की योजना रोक दी है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने जोर देकर कहा कि ईरान के साथ गंभीर बातचीत जारी है जो एक स्वीकार्य समझौते तक पहुंच सकती है। ट्रंप ने सोमवार को 'ट्रुथ सोशल' पर यह घोषणा की जिसमें उन्होंने अमेरिका-ईरान युद्ध में मध्यस्थता कर रहे पाकिस्तान का कोई जिक्र नहीं किया। उन्होंने कहा, ''कतर के अमीर तमीम बिन हमद अल थानी, सऊदी अरब के शहजादे मोहम्मद बिन सलमान अल सऊद और संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने मुझसे ईरान पर कल (मंगलवार) होने वाले हमारे सुनियोजित सैन्य हमले को स्थगित करने का अनुरोध किया है।'' ट्रंप ने 'व्हाइट हाउस' (अमेरिका के राष्ट्रपति का आधिकारिक आवास एवं कार्यालय) में कहा, ''हम कल एक बहुत बड़ा हमला करने की तैयारी कर रहे थे। मैंने इसे कुछ समय के लिए टाल दिया है। उम्मीद तो है कि यह हमेशा के लिए हो, लेकिन फिलहाल संभवतः कुछ समय के लिए है। हमने ईरान के साथ व्यापक बातचीत की है और हम देखेंगे कि उनका क्या नतीजा निकलता है।''

'भारतीय वर्कर्स को बैन करेंगे', ताइवान में भारत के खिलाफ भड़क रहा नस्लवाद, पोस्टर में दिखी नफरत

एजेंसी ताइपे

चीन के कट्टर दुश्मन ताइवान में एक नेता ने भारत के खिलाफ जमकर जहर उगला है। इस नेता का नाम ली हंग-यी है। वह काओहसियुंग शहर के सियाओगांग जिले में एक बरो वार्डन हैं और आगामी नगर परिषद चुनावों में एक स्वतंत्र उम्मीदवार हैं। उसने चुनाव प्रचार के दौरान एक ऐसा बिलबोर्ड लगाया है, जिसमें भारतीय राष्ट्रीय ध्वज और पगड़ी पहने एक व्यक्ति की तस्वीर के ऊपर 'नहीं' (no) का निशान बना हुआ है।

ताइवान में इस बिलबोर्ड की नस्लीय भेदभाव के लिए आलोचना की जा रही है। हालांकि, इसने ताइवान में आप्रवासन नीति पर एक बहस भी छेड़ दी है। ताइवान ने 2024 में प्रवासी श्रमिकों को स्वीकार करने के लिए भारत के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए थे। 2024 के इस MoU की ताइवान के कुछ हलकों में आलोचना हुई। इस बीच, देश की मुख्य विपक्षी पार्टी, चीनी राष्ट्रवादी पार्टी (KMT) ने यह डर फैलाया है कि "भाग जाने वाले" भारतीय प्रवासी श्रमिक देश में "महिलाओं की सुरक्षा को खतरे में डाल देंगे।" ताइवान की सेंट्रल न्यूज़ एजेंसी (CNA) और ताइवान न्यूज की रिपोर्टों के अनुसार, उम्मीदवार ली हंग-यी ने एक ऐसा बिलबोर्ड लगाया, जिसमें भारतीय राष्ट्रीय ध्वज और पगड़ी पहने एक व्यक्ति की तस्वीर के ऊपर 'नहीं' का निशान बना हुआ था। ली ने कहा कि इस संदेश का उद्देश्य भारत से प्रवासी श्रमिकों को भर्ती करने की ताइवान की योजना के प्रति अपना विरोध जताना था।

ताइवान में रहने वाले एक भारतीय नागरिक ने इस बिलबोर्ड को "खुलेआम और सीधा नस्लीय भेदभाव" बताया। CNA से बात करते हुए एक भारतीय नागरिक ने कहा कि हालांकि प्रवासी श्रमिक नीति पर असहमति समझ में आती है, लेकिन "इसे इस तरह से व्यक्त करना वास्तव में सही नहीं लगता।" पोस्ट में यह तर्क दिया गया कि ऐसा लगता है कि इस चुनावी सामग्री में किसी विशिष्ट समूह के प्रति द्वेष भड़काने के लिए शारीरिक विशेषताओं और सांस्कृतिक प्रतीकों का इस्तेमाल किया गया है।

ताइवान में कितने भारतीय रहते हैं?

ताइवान में स्थायी या दीर्घकालिक रूप से रहने वाले भारतीय नागरिकों की संख्या लगभग 5,000 से 7,000 के बीच है।

हालांकि, बिजनेस ट्रिप, टूरिज्म और छोटे समय के प्रोजेक्ट्स के लिए हर साल हजारों भारतीय ताइवान आते हैं।

एक रिपोर्ट के अनुसार, साल 2025 में ही करीब 46,000 से अधिक भारतीयों ने ताइवान की यात्रा की थी। भारत के सैकड़ों इंजीनियर और तकनीकी विशेषज्ञ ताइवान की सेमीकंडक्टर और आईटी सेक्टर में काम करते हैं। इसके अलावा ताइवान की संस्थाओं में भारतीय शोधकर्ताओं और प्रोफेसरों की अच्छी-खासी संख्या है।

लखनऊ को हराने के बाद वैभव सूर्यवंशी ने किया अनोखा सेलिब्रेशन, खुद कही बड़ी बात

एजेंसी जयपुर

आईपीएल 2026 में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ महज 38 गेंदों पर 93 रनों की आतिशी पारी खेलने वाले राजस्थान रॉयल्स के 15 साल के युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी इस समय हर तरफ छाए हुए हैं। इस करो या मरो वाले मुकाबले में वैभव ने न सिर्फ 5 ऐतिहासिक महा-रिकॉर्ड बनाए, बल्कि टीम के लिए सबसे नाजुक समय पर प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड भी जीता। अपनी इस तूफानी पारी के दौरान वैभव ने मैदान पर अपने अनोखे सेलिब्रेशन से भी सबका ध्यान खींचा। मैच के बाद जब उनसे उनके इस खास और नए सेलिब्रेशन के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने बेहद बेबाकी और मासूमियत से इसका जवाब दिया। मैदान पर अर्धशतक पूरा करने के बाद अपने खास स्टाइल में जश्न मनाने को लेकर वैभव सूर्यवंशी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'सर, मुझे खुद नहीं पता! मैं बस हर मैच में कुछ न कुछ नया सेलिब्रेशन करने की कोशिश करता हूं। इसके पीछे मेरी कोई प्लानिंग नहीं होती और न ही इसका कोई खास मतलब या संदेश होता है। यहाँ तक कि पिछले मैच में मैंने जो सेलिब्रेशन किया था, उसका भी कोई मतलब नहीं था। मैं बस मैदान पर नई-नई चीजें ट्राई करता रहता हूं।' लखनऊ के 221 रनों के पहाड़ जैसे लक्ष्य का पीछा करते हुए वैभव ने शुरुआत में थोड़ा समय लिया, लेकिन फिर देखते ही देखते लखनऊ के गेंदबाजों को रिमांड पर ले लिया। अपनी इस रणनीति पर बात करते हुए उन्होंने कहा, 'जब हमारी गेंदबाजी चल रही थी, तो मैं बाहर बैठकर विकेट को देख रहा था। पिच बहुत अच्छी लग रही थी। मैंने बस यही सोचा था कि आज शुरुआत में ज्यादा जल्दबाजी नहीं करूँगा। थोड़ा समय लूंगा, क्योंकि अगर मैं क्रीज पर लंबा टिकता हूं, तो इससे दूसरे छोर पर मौजूद बल्लेबाज को भी काफी मदद मिलेगी। मुझे पता है कि मैं कभी भी दो-तीन चौके या छक्के लगा सकता हूं, इसलिए पैनिक होने की जरूरत नहीं थी।' इतनी कम उम्र में मिल रही वाहवाही और अटेंशन को कैसे संभालते हैं वैभव? महज 15 साल की उम्र में पूरे क्रिकेट जगत में नाम कमाने और दिग्गजों से मिल रही तारीफों पर वैभव के पैर आज भी जमीन पर हैं। उन्होंने बेहद परिपक्वता से जवाब देते हुए कहा, 'मैं इन सब चीजों पर ज्यादा ध्यान नहीं देता। मैं अखबार या सोशल मीडिया की खबरें नहीं पढ़ता, इसलिए इस बारे में ज्यादा नहीं सोचता। मैं जानता हूं कि यह तो बस शुरुआत है। अगर मेरा करियर लंबा होता है और मैं देश के लिए लंबे समय तक खेलता हूँ, तो लोग आगे और भी बहुत सी बातें करेंगे। मेरा पूरा फोकस सिर्फ अपने खेल पर होना चाहिए ताकि मैं अपने इस सफर को पूरा कर सकूं।' अगले मैच और प्लेऑफ के टिकट पर टीम का माइंडसेट मुंबई इंडियंस के खिलाफ होने वाले आखिरी और सबसे महत्वपूर्ण लीग मैच को लेकर वैभव ने कहा कि टीम बिना किसी दबाव के मैदान पर उतरेगी। उन्होंने कहा, 'हमारा फोकस सिर्फ खेल का लुत्फ उठाने पर है। अगले मैच में भी हम मैदान के बाहर की चीजों पर ध्यान नहीं देंगे। हर खिलाड़ी को सिर्फ मैच पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और मजे के साथ खेलना चाहिए, जैसा कि हम पूरे टूर्नामेंट में करते आए हैं। इस सीजन में कई उतार-चढ़ाव आए हैं, लेकिन हमारा इकलौता लक्ष्य अच्छी क्रिकेट खेलना और मैच जीतना है।'

प्रीमियर लीग खिताब की दौड़, आखिरी मोड़ पर जंग, आर्सेनल की जीत ने मैनचेस्टर सिटीकी बढ़ाई टेंशन

एजेंसी नई दिल्ली

प्रीमियर लीग खिताब की दौड़ अब बेहद दिलचस्प मोड़ पर पहुंच गई है। आर्सेनल ने बर्नली के खिलाफ दबाव भरे मुकाबले में एक-शून्य की जीत हासिल कर ली है और अब टीम चैंपियन बनने से सिर्फ एक कदम दूर खड़ी दिखाई दे रही हैं। मौजूद जानकारी के अनुसार, अगर मैनचेस्टर सिटी अपने अगले मुकाबले में अंक गंवा देती है तो आर्सेनल को सीधे प्रीमियर लीग का खिताब मिल सकता है। हालांकि पेप गार्डियोला की टीम भी शानदार फॉर्म में है और लगातार जीत दर्ज करते हुए आर्सेनल पर दबाव बनाए हुए हैं। गौरतलब है कि आर्सेनल का यह मुकाबला आसान नहीं था। पहले से रेलीगेट हो चुकी बर्नली टीम ने पूरे मैच में कड़ी चुनौती दी और आर्सेनल के खिलाड़ियों को खुलकर खेलने का ज्यादा मौका नहीं दिया। इसके बावजूद मिकेल आर्टेटा की टीम धैर्य बनाए रखने में सफल रही हैं। मैच का एकमात्र गोल काई हावर्ट्ज ने किया। बुकायो साका के कोने से मिले शानदार पास पर हावर्ट्ज ने ऊंची छलांग लगाकर गेंद को जाल में पहुंचा दिया। यही गोल आखिर में मैच का फैसला साबित हुआ हैं। बता दें कि इस जीत के साथ आर्सेनल ने इस सत्र में ग्यारहवीं बार एक-शून्य से मुकाबला जीता है, जो वर्ष 1994 के बाद क्लब का सबसे बड़ा आंकड़ा माना जा रहा हैं। बुकायो साका ने भी मुकाबले में एक खास उपलब्धि हासिल की। उन्होंने प्रीमियर लीग में अपने पचास गोल और पचास गोल पास पूरे कर लिए हैं। वह ऐसा करने वाले आर्सेनल के चुनिंदा खिलाड़ियों में शामिल हो गए हैं। इससे पहले डेनिस बर्गकैंप, थिएरी हेनरी, सेस्क फाब्रेगास और मेसुत ओजिल यह उपलब्धि हासिल कर चुके हैं। गौरतलब है कि साका अब सबसे कम उम्र में पचास गोल और पचास गोल पास का आंकड़ा छूने वाले खिलाड़ियों की सूची में दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। उनसे आगे सिर्फ वेन रूनी का नाम मौजूद हैं। मैच के बाद आर्सेनल के कोच मिकेल आर्टेटा ने स्वीकार किया कि मुकाबले के दौरान दबाव साफ महसूस हो रहा था। उन्होंने मजाकिया अंदाज में कहा कि तनाव इतना बढ़ गया है कि अब उनके बाल झड़ने की चिंता होने लगी है। वहीं टीम के कप्तान मार्टिन ओडेगार्ड ने घरेलू समर्थकों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ मुकाबलों में स्टेडियम के बाहर और अंदर का माहौल शानदार रहा है और प्रशंसकों ने टीम का हौसला लगातार बढ़ाया है। दूसरे हाफ में बर्नली ने वापसी की कोशिश की और एबेरेची एजे ने एक जोरदार शॉट से आर्सेनल की चिंता बढ़ा दी थी। वहीं काई हावर्ट्ज के एक टैकल पर वीडियो सहायक रेफरी से भी जांच कराई गई, लेकिन आखिर में उन्हें पीला कार्ड दिया गया और लाल कार्ड से राहत मिल गई है। आर्सेनल की रक्षापंक्ति ने एक बार फिर शानदार प्रदर्शन किया और टीम ने लगातार एक और बिना गोल खाए जीत दर्ज कर ली। अब प्रीमियर लीग खिताब पूरी तरह आर्सेनल के हाथ में नजर आ रहा है। अगर टीम अंतिम मुकाबले में जीत हासिल कर लेती है तो लंबे इंतजार के बाद इतिहास रच सकती है।

कार्लो एंचेलोटी का सबसे बड़ा दांव, विश्व कप के लिए ब्राजील टीम में चोटिल नेमार की एंट्री

एजेंसी नई दिल्ली

ब्राजील फुटबॉल टीम ने आखिरकार विश्व कप 2026 के लिए अपनी टीम का ऐलान कर दिया है और सबसे ज्यादा चर्चा स्टार खिलाड़ी नेमार की वापसी को लेकर हो रही हैं। पिछले काफी समय से चोट और फिटनेस की समस्या से जूझ रहे नेमार को टीम में शामिल किए जाने को कई फुटबॉल विशेषज्ञों ने अप्रत्याशित बताया हैं।

मौजूद जानकारी के अनुसार, 34 वर्षीय नेमार अक्टूबर 2023 में घुटने की गंभीर चोट का शिकार हुए थे। उनके बाएं घुटने की एसीएल चोट के बाद लंबे समय तक मैदान से बाहर रहना पड़ा था। इसके बाद से वह पूरी फिटनेस हासिल करने के लिए लगातार संघर्ष कर रहे थे। हालांकि इसके बावजूद ब्राजील के मुख्य कोच कार्लो एंचेलोटी ने उन पर भरोसा जताया हैं।

गौरतलब है कि नेमार ब्राजील के इतिहास में सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी हैं। उन्होंने राष्ट्रीय टीम के लिए 79 गोल किए हैं और अब वह एक बार फिर विश्व कप में अपनी छाप छोड़ने की तैयारी में जुटे हुए हैं।

बता दें कि इटली के अनुभवी कोच कार्लो एंचेलोटी ने मई 2025 में ब्राजील टीम की जिम्मेदारी संभाली थी। हाल ही में उनका अनुबंध 2030 विश्व कप तक बढ़ाया गया है। हालांकि उनका शुरुआती कार्यकाल आसान नहीं रहा है, क्योंकि कई अहम खिलाड़ी चोट की वजह से टीम से बाहर हो गए हैं।

ब्राजील को सबसे ज्यादा कमी रोड्रिगो और एस्टेवाओ की महसूस हो सकती है, जो चोट के कारण इस बार विश्व कप टीम का हिस्सा नहीं बन पाए हैं। इसके बावजूद टीम में विनीसियस जूनियर, राफिन्हा, कैसीमिरो और ब्रूनो गिमाराइस जैसे बड़े नाम शामिल हैं।

टीम में गोलकीपर के तौर पर एलिसन, एडर्सन और वेवर्टन को जगह दी गई हैं। वहीं रक्षापंक्ति में एलेक्स सैंड्रो, दानिलो, मार्किन्होस, गेब्रियल मगलहाइस और ब्रेमर जैसे अनुभवी खिलाड़ी मौजूद हैं।

मिडफील्ड में कैसीमिरो, ब्रूनो गिमाराइस, फाबिन्हो और लुकास पाकेता को शामिल किया गया है, जबकि आक्रमण पंक्ति में नेमार के अलावा विनीसियस जूनियर, राफिन्हा, गेब्रियल मार्टिनेली, मैथियस कुन्हा और युवा खिलाड़ी एंड्रिक को मौका मिला है।

गौरतलब है कि ब्राजील इस बार भी विश्व कप जीतने के बड़े दावेदारों में माना जा रहा है। टीम में अनुभवी खिलाड़ियों और युवा प्रतिभाओं का अच्छा संतुलन देखने को मिल रहा है। अब सभी की नजरें इस बात पर रहेंगी कि लंबे समय बाद वापसी कर रहे नेमार मैदान पर कितना असर छोड़ पाते हैं।

इशान किशन की वनडे टीम में वापसी, 950 दिन पहले अफगानिस्तान के खिलाफ ही खेला था अंतिम मैच

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज इशान किशन का लंबे समय बाद वनडे टीम में चयन हुआ है। उन्होंने 950 दिन पहले अपना आखिरी वनडे मैच में अफगानिस्तान के खिलाफ खेला था। अब 14 जून से शुरू होने वाली वनडे सीरीज में एक बार फिर से वह नजर आएंगे। इशान किशन की पहले टी20 टीम में वर्ल्ड कप से पहले वापसी हुई। अब जब तैयारी शुरू होनी है वनडे वर्ल्ड कप 2027 की तो उनका अब एकदिवसीय स्क्वाड में भी चयन हो गया है। इशान ने अपना आखिरी वनडे मैच 11 अक्टूबर 2023 को वनडे वर्ल्ड कप में ही अफगानिस्तान के खिलाफ खेला था। अब ठीक 950 दिन बाद ही उनका फिर से भारतीय वनडे टीम में चयन हो गया है। इशान किशन को टीम में बतौर सेकंड विकेटकीपर और बतौर बैकअप ओपनर शामिल किया गया है। रोहित शर्मा की फिटनेस के आधार पर उनका सेलेक्शन हुआ है। अगर रोहित फिट नहीं होते हैं तो उनका प्लेइंग 11 में खेलने पर संशय है। ऐसे में शुभमन गिल और इशान किशन की जोड़ी पारी की शुरुआत कर सकती है। इशान के नाम वनडे में दोहरा शतक भी दर्ज है। अफगानिस्तान के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए भारत का स्क्वाड शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर (उपकप्तान), केएल राहुल, इशान किशन, हार्दिक पंड्या, नितीश रेड्डी, वॉशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, प्रिंस यादव, गुरनूर बरार, हर्ष दुबे। इशान किशन को भारत के 2023 वनडे वर्ल्ड कप के स्क्वाड में भी बतौर बैकअप ओपनर शामिल किया गया था। उन्होंने डेंगू से पीड़ित शुभमन गिल की जगह पहले दो मैच भी खेले थे। आखिरी बार वह वनडे टीम में अफगानिस्तान के खिलाफ ही नजर आए थे। इशान ने भारत के लिए अभी तक 27 वनडे इंटरनेशनल मुकाबले खेले हैं। इशान के नाम 27 वनडे मैचों की 24 पारियों में 42.40 की औसत और 102.19 के स्ट्राइक रेट से 933 रन दर्ज हैं। उन्होंने वनडे में सात अर्धशतक और एकमात्र शतक लगाया है जो उनकी इस फॉर्मेट में एकमात्र डबल सेंचुरी भी था। किशन ने बांग्लादेश के खिलाफ 210 रनों की बेहतरीन पारी खेली थी। उसके बाद से वह सिर्फ दो वनडे मैच ही खेले थे और अब तकरीबन तीन साल बाद वह फिर से वनडे टीम का हिस्सा बन चुके हैं।

व्यापार

NPS सब्सक्राइबर्स के लिए राहत भरी खबर, अब चुनिंदा मामलों में एन्युइटी छोड़ने की मिलेगी अनुमति

एजेंसी नई दिल्ली

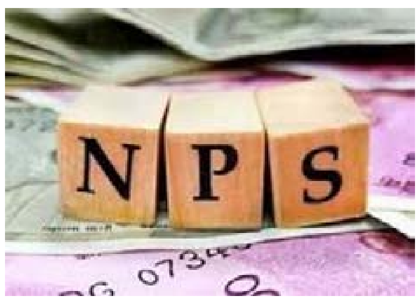

अब NPS में आपकी एन्युइटी पूरी तरह लॉक नहीं रहेगी। पेंशन फंड रेगुलेटर पेंशन निधि विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (PFRDA) ने नियमों में बदलाव करते हुए कुछ खास परिस्थितियों में एन्युइटी पॉलिसी सरेंडर करने की अनुमति दे दी है। नए नियमों के तहत अगर किसी NPS सब्सक्राइबर को गंभीर बीमारी हो जाती है या उसकी मौजूदा एन्युइटी पॉलिसी में पहले से सरेंडर का विकल्प मौजूद है, तो वह पॉलिसी से बाहर निकल सकता है। इससे पहले एन्युइटी खरीदने के बाद रकम लंबे समय तक लॉक मानी जाती थी।

इस फैसले का सबसे बड़ा असर उन रिटायर्ड लोगों पर पड़ेगा जिन्हें मेडिकल इमरजेंसी या आर्थिक जरूरत के समय तुरंत पैसे की जरूरत होती है। नए बदलाव से NPS निवेशकों को अपने रिटायरमेंट फंड पर पहले के मुकाबले ज्यादा लचीलापन मिलेगा। हाल ही जारी एक सर्कुलर में PFRDA ने बताया कि उसने NPS के तहत खरीदी गई एन्युइटी पॉलिसी को सरेंडर करने के नियमों में ढील दी है। नए नियमों के मुताबिक, अब कुछ NPS सब्सक्राइबर्स को कुछ खास मामलों में, खासकर गंभीर बीमारी होने पर, अपनी एन्युइटी पॉलिसी सरेंडर करने की इजाजत होगी। PFRDA ने सर्कुलर में कहा कि उसे "एन्युइटी लेने वालों की तरफ से शिकायतें मिली थीं, जिनमें उन्होंने इस तरह की पाबंदी की वजह से होने वाली दिक्कतों का ज़िक्र किया था। खासकर उन मामलों में, जहां इस सर्कुलर के जारी होने से पहले खरीदी गई एन्युइटी पॉलिसी में कुछ खास स्थितियों में सरेंडर करने का साफ-साफ नियम मौजूद था।" इसके अलावा, एन्युइटी लेने वाले या उसके परिवार के किसी सदस्य को गंभीर बीमारी होने पर भी पॉलिसी सरेंडर करने की इजाजत देने की गुजारिशें मिली थीं। इन गुजारिशों की समीक्षा करने के बाद, रेगुलेटर ने सब्सक्राइबर्स के हित को ध्यान में रखते हुए कुछ मामलों में सरेंडर पर लगी पाबंदियों में ढील देने का फैसला किया। पहले क्या था नियम? PFRDA ने अक्टूबर 2024 में एन्युइटी नियमों को और सख्त करते हुए कहा था कि एन्युइटी पॉलिसी खरीदने के बाद उसे सरेंडर या रद्द नहीं किया जा सकता, सिवाय "फ्री लुक कैंसलेशन पीरियड" के दौरान। इस पाबंदी का मुख्य मकसद NPS सब्सक्राइबर्स के लिए रिटायरमेंट के बाद होने वाली आय की सुरक्षा को लंबे समय तक सुनिश्चित करना था।

सर्कुलर में बताया गया है कि अब नीचे दिए गए हालात में एन्युइटी पॉलिसी सरेंडर करने की इजाजत होगीः गंभीर बीमारी के मामलेः अगर सब्सक्राइबर या उसके परिवार का कोई सदस्य किसी गंभीर बीमारी से पीड़ित है, तो एन्युइटी पॉलिसी सरेंडर की जा सकती है। हालांकि, ऐसी किसी भी रिक्वेस्ट पर Annuity Service Provider (ASP) अपनी अंदरूनी पॉलिसी और प्रोसेस के हिसाब से जांच-पड़ताल और मंजूरी देगा। सरेंडर क्लॉज वाली पुरानी एन्युइटी पॉलिसीः आप 24 अक्टूबर, 2024 से पहले जारी की गई एन्युइटी पॉलिसी भी सरेंडर कर सकते हैं, अगर ओरिजिनल पॉलिसी डॉक्यूमेंट में साफ तौर पर सरेंडर का कोई नियम बताया गया हो। PFRDA ने सरेंडर की रिक्वेस्ट पर कार्रवाई करने के लिए एक आसान प्रोसेस भी बनाया है। ASP को सरेंडर की रिक्वेस्ट पर कार्रवाई शुरू करने से पहले, एन्युटी पाने वाले व्यक्ति को सरेंडर की फाइनल रकम (जिसमें सभी लागू चार्ज और टैक्स शामिल हों) लिखकर देनी होगी। सरेंडर की कार्रवाई तभी आगे बढ़ाई जा सकती है, जब सब्सक्राइबर ने फ़ाइनल पेमेंट की रकम के लिए अपनी लिखित सहमति दे दी हो। एक बार मंजूरी मिल जाने पर, सरेंडर की रकम सीधे सब्सक्राइबर के बैंक अकाउंट में जमा कर दी जाएगी।

फॉर्म 16 पर भरोसा कर टैक्स छूट क्लेम करना पड़ा भारी, लगा 51.2 लाख रुपये का जुर्माना; फिर ITAT के फैसले से मिली राहत

एजेंसी नई दिल्ली

फॉर्म 16 के आधार पर टैक्स छूट का दावा करने वाले करदाता पर लगा 51.20 लाख रुपये का जुर्माना ITAT ने रद्द कर दिया। ट्रिब्यूनल ने कहा, गलती तकनीकी थी और दावा सच्ची नीयत से किया गया था...

आयकर विभाग ने नियोक्ता द्वारा जारी किए गए फॉर्म 16 के आधार पर टैक्स छूट का दावा करने वाले एक करदाता पर 51.20 लाख रुपये का भारी जुर्माना लगा दिया था। हालांकि, अब Income Tax Appellate Tribunal की बेंगलुरु पीठ ने करदाता के पक्ष में फैसला सुनाते हुए कहा है कि यह दावा "सच्ची नीयत" (bona fide belief) के तहत किया गया था, इसलिए केवल तकनीकी आधार पर जुर्माना नहीं लगाया जा सकता। यह मामला विप्रो लिमिटेड के एक कर्मचारी रेनिल ई के कुमार से जुड़ा था, जो असेसमेंट ईयर 2022-23 के लिए था। ट्रिब्यूनल के आदेश के अनुसार, टैक्सपेयर ने 30 दिसंबर, 2022 को अपना इनकम टैक्स रिटर्न फाइल किया, जिसमें उसने कुल 84.27 लाख रुपये की इनकम बताई। टैक्सपेयर के अनुसार, यह दावा उनके एम्प्लॉयर द्वारा जारी किए गए फॉर्म 16 के आधार पर किया गया था, जिसमें इस रकम को सेक्शन 10 के तहत छूट वाली इनकम के तौर पर दिखाया गया था। चूंकि एम्प्लॉयर ने इस रकम पर सोर्स पर टैक्स भी नहीं काटा था, इसलिए टैक्सपेयर ने कहा कि उन्हें लगता है कि टैक्स ट्रीटमेंट सही था। फाइल किए गए रिटर्न के आधार पर, उन्होंने 28.69 लाख रुपये के रिफंड का दावा किया, और सेक्शन 143(1) के तहत प्रोसेसिंग के बाद, इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने लगभग 29.98 लाख रुपये का रिफंड जारी किया। हालांकि, बाद में मामला जांच के दायरे में आ गया।

असेसमेंट ने सब कुछ बदल दिया जांच असेसमेंट के दौरान, असेसिंग ऑफिसर (AO) ने माना कि छूट का दावा गलत था और पूरे 82.05 लाख रुपये को नामंजूर कर दिया। नतीजतन, 19 मार्च, 2024 के असेसमेंट ऑर्डर के तहत टैक्सपेयर की असेस्ड इनकम 84.27 लाख रुपये से बढ़कर 1.66 करोड़ रुपये हो गई। उसी दिन, पेनल्टी की कार्रवाई भी शुरू की गई। बाद में AO ने सेक्शन 270A के तहत 51.20 लाख रुपये की पेनल्टी लगाई और मामले को इनकम की गलत रिपोर्टिंग का मामला माना, जिसमें कम बताई गई इनकम पर देय टैक्स का 200% पेनल्टी लगती है। टैक्स डिपार्टमेंट ने तर्क दिया कि टैक्सपेयर ने गलत तरीके से छूट का दावा किया था और अगर मामले को स्क्रूटनी के लिए नहीं चुना गया होता, तो इनकम टैक्सेशन से बच जाती। AO ने टैक्सपेयर की इस सफाई को भी खारिज कर दिया कि उसने एम्प्लॉयर के फॉर्म 16 पर भरोसा किया था। ऑर्डर के अनुसार, ऑफिसर का मानना था कि चूंकि टैक्सपेयर विप्रो में एक सीनियर एग्जीक्यूटिव था, इसलिए कम टैक्स जानकारी का तर्क सही नहीं था। डिपार्टमेंट ने यह भी तर्क दिया कि असेसमेंट ऑर्डर के खिलाफ अपील न करके, टैक्सपेयर ने असल में यह मान लिया था कि छूट का दावा गलत था।

वॉट्सऐप पर सिर्फ Hello लिखकर जानें अपना PF बैलेंस, EPFO शुरू करने जा रहा है नई सर्विस

एजेंसी नई दिल्ली

अगर आप नौकरीपेशा हैं और कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के मेंबर हैं तो पीएफ बैलेंस से लेकर क्लेम स्टेटस तक की जानकारी वॉट्सऐप (WhatsApp) पर जान पाएंगे। इसके लिए आपको सिर्फ 'Hello' लिखकर एक मैसेज करना होगा। इसके बाद पूरी जानकारी आपके स्मार्टफोन की स्क्रीन पर होगी। यह सर्विस हफ्ते के सातों दिन 24 घंटे उपलब्ध रहेगी। दरअसल, ईपीएफओ अपने सदस्यों तक पहुंच बढ़ाने और सेवाओं को आसान बनाने के लिए जल्द ही लोकप्रिय मैसेजिंग प्लेटफॉर्म पर अपनी नई सर्विस शुरू करने की योजना बना रहा है। बिजनेस टुडे के मुताबिक इस नई पहल का मुख्य उद्देश्य सब्सक्राइबर्स को बिना किसी परेशानी के तुरंत पीएफ बैलेंस देखने, आखिरी पांच ट्रांजैक्शन की हिस्ट्री जानने और क्लेम स्टेटस ट्रैक करने की सुविधा देना है। वॉट्सऐप सपोर्ट सर्विस का फायदा उन सदस्यों को भी मिलेगा जो प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना (PMVBRY) के तहत पात्र हैं, लेकिन उनके कुछ काम अधूरे हैं। इनमें यूआईडीएआई (UIDAI) की फेस ऑथेंटिकेशन टेक्नोलॉजी (FAT) के लिए वेरिफिकेशन पूरा न होना और बैंक खाते में डीबीटी (Direct Benefit Transfer) का इनेबल न होना शामिल है। ऐसे सदस्य भी अब वॉट्सऐप के जरिए जरूरी सपोर्ट और गाइडेंस हासिल कर सकेंगे। सदस्यों को ईपीएफओ (EPFO) के रजिस्टर्ड वॉट्सऐप नंबर पर सिर्फ Hello टाइप करके भेजना होगा। इसके अलावा सदस्य अपने रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर पर ईपीएफओ के मैसेज रिसीव करने का विकल्प भी चुन सकते हैं। ईपीएफओ सबसे पहले यह चेक करेगा कि वॉट्सऐप मैसेज उसी मोबाइल नंबर से आया है जो सदस्य के यूएएन (Universal Account Number) से लिंक है। वेरिफिकेशन सफल होने के बाद सदस्य को उनकी स्थानीय भाषा में एक सिंपल मेन्यू (Menu) दिखेगा। सदस्य अपनी जरूरत के हिसाब से विकल्प चुनकर या साधारण सवालों के जवाब देकर जानकारी हासिल कर सकेंगे।

अपनी हथेली में अभी देखें केतु पर्वत, जानें किस्मत में सक्सेस है या संघर्ष

ज्योतिष शास्त्र में केतु को छाया ग्रह माना जाता है। केतु को वैराग्य, मोक्ष, गूढ़ ज्ञान और आदि का कारक माना जाता है। जिस तरह से ज्योतिष शास्त्र में कुंडली में केतु का स्थान देखकर व्यक्ति के स्वभाव और जीवन के बारे में पता लगाया जाता है। ठीक उसी तरह से हथेली में केतु पर्वत का उभार देखकर व्यक्ति के बारे में कई खास बातें जानी जा सकती हैं। हस्तरेखा विज्ञान के मुताबिक केतु ग्रह का प्रभाव किसी जातक के जीवन के 5वें से 20वें वर्ष तक होता है। लेकिन अगर हथेली में केतु पर्वत पूर्ण रूप से विकसित होता है, तो इसको ज्योतिष में अच्छा संकेत माना जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको केतु पर्वत से जुड़ी कुछ खास बातें बताने जा रहे हैं।

कहां होता है केतु पर्वत हस्तरेखा शास्त्र के मुताबिक हथेली में यह पर्वत मणिबंध के ठीक ऊपर यानी की कलाई से ऊपर और चंद्र व शुक्र पर्वत के बीच में होता है। वहीं केतु पर्वत भाग्य रेखा के शुरूआती स्थान के पास होता है। माना जाता है कि केतु का फल भी राहु के समान ही देखने को मिलता है। इसका प्रभाव जीवन के 5वें साल से 20वें साल तक दिखाई देता है।

विकसित केतु पर्वत अगर हथेली में केतु पर्वत स्वाभाविक रूप से विकसित होता है यानी की अच्छे से उभरा होता है। वहीं भाग्य रेखा भी स्पष्ट, साफ और गहरी दिखती है, तो इसको शुभ संकेत माना जाता है। माना जाता है कि ऐसा व्यक्ति बहुत भाग्यशाली होता है। इनको जीवन में किसी चीज की कमी नहीं रहती है। इनको हर तरह का सुख प्राप्त होता है। वहीं इन जातकों को अपनी मेहनत का पूरा फल मिलता है। अगर ऐसा जातक गरीब घर में भी जन्म लेता है, तो भी आगे जाकर वह खूब धनवान बनता है। इनको जीवन में भाग्य का पूरा साथ मिलता है।

अविकसित केतु पर्वत और प्रबल भाग्य रेखा होना अगर हथेली में केतु पर्वत अविकसित है, यानी की इसमें बिल्कुल भी उभार नहीं है, लेकिन भाग्य रेखा प्रबल है। तो इस स्थिति में व्यक्ति के जीवन में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। इन लोगों को अपनी आर्थिक स्थिति पर ध्यान देने की ज्यादा जरूरत होती है। जब हथेली में केतु पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हो और भाग्य रेखा भी प्रबल और स्पष्ट होती है। तो इसका पूरा फल प्राप्त होता है। ऐसा पर्वत जीवन में उन्नति और सफलता का संकेत देता है और भाग्य में भी वृद्धि कर सकता है।

कमजोर केतु और भाग्य रेखा का अर्थ हस्तरेखा विज्ञान के मुताबिक अगर हथेली में पर्वत का उभार सही तरह से नहीं होता है, साथ ही भाग्य रेखा भी कमजोर हो। तो इसको अच्छा संकेत नहीं माना जाता है। भाग्य रेखा गहरी और साफ न होने का संकेत है कि ऐसे व्यक्ति को बचपन में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अच्छे फल प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है। वहीं किसी भी कार्य में लगातार प्रयास की जरूरत होती है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से भी इन लोगों के जीवन में परेशानियां आ सकती हैं। वहीं बचपन में सेहत पर ध्यान देना जरूरी होता है।

बिना तोड़-फोड़ किराए के घर में लाएं सकारात्मक ऊर्जा, ये वास्तु के आसान नियम बदल देंगे आपका घर

शहर में पढ़ाई, नौकरी और बिजनस के लिए लोग किराए के घर में रहते हैं। ऐसे में लोगों का लगता है कि अपने घर में वास्तु के उपाय किए जाते हैं, किराए के घर में नहीं। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। वास्तु मान्यताओं के अनुसार, किराए के घर में कुछ भी आसान वास्तु उपाय अपनाकर सकारात्मक ऊर्जा, सुख-शांति और तरक्की प्राप्त की जा सकती है। सबसे जरुरी बात तो यह है कि इन उपायों के लिए किसी प्रकार की तोड़फोड़ या बड़े बदलाव की जरुरत नहीं है।

घर की साफ-सफाई वास्तु शास्त्र के अनुसार, स्वच्छ घर में सकारात्मक ऊर्जा निरंतर बनीं रहती है। किराए के घर में प्रवेश करते ही सबसे पहले पूरे घर की अच्छी तरह से सफाई कर लें। घर के बेकार, टूटी-फूटी और अनुपयोगी वस्तुएं जमा बिल्कुल न करें। माना जाता है कि गंदगी और अव्यवस्छा नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाती है, जिससे मानसिक तनाव और आर्थिक परेशानियां बढ़ जाती हैं।

मुख्य द्वार पर दें ध्यान वास्तु के मुताबिक घर का मुख्य द्वार ऊर्जा का प्रमुख स्रोत माना जाता है। किराए के घर में मुख्य दरवाजे को हमेशा साफ रखें। दरवाजे पर शुभ प्रतीक जैसे कि स्वास्तिक, ॐ या शुभ-लाभ लगाना शुभ होता है। इसके अलावा मुख्य द्वार के पास पर्याप्त रोशनी होना जरुरी है। जिससे सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बना रहेगा।

पूजा स्थान सही दिशा में रखें किराए के घर में रहने वाले लोगों के लिए सबसे जरुरी है सही पूजा स्थान। घर में छोटा सा पूजा स्थान भी सकारात्मक वातावरण बनाने में मदद करता है। वास्तु अनुसार, ईशान कोण यानी उत्तर-पूर्व दिशा पूजा के लिए सबसे शुभ मानी जाती है। अगर संभव हुआ तो पूजा करते समय मुख पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ जरुर करें। इससे मन में शांति और सकारात्मकता बनीं रहेगी।

सोने की दिशा का रखें ध्यान वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि सोते समय सिर दक्षिण या पूर्व दिशा की ओर होना शुभ माना जाता है। इससे नींद अच्छी आती है और मानसिक तनाव कम होता है। लेकिन उत्तर दिशा में सिर रखकर सोने से बचना चाहिए। किराए के घर में भी इस छोटे से नियम को अपनाकर हेल्थ और मानसिक स्थिति को बेहतर बनाया जा सकता है।

रसोई और जल तत्व का संतुलन घर में रसोई गलत दिशा में हो, तो चिंता करने की जरुरत नहीं है। वास्तु मान्यता के अनुसार, रसाई को हमेशा साफ-सुथरा रखें और गैस चूल्हे के पास पानी से भरे बर्तन न रखें। क्योंकि पानी और अग्नि तत्व का संतुलन बनाए रखना जरुरी होता है। इसके अलावा घर में पानी का रिसाव या टपकता नल तुरंत ठीक करवाने चाहिए, क्योंकि इसे आर्थिक हानि का कारण माना जाता है।

द्रौपदी का श्री कृष्ण से पूछा वो सवाल जिससे पांडव भी हो गए थे निरुत्तर

महाभारत के वन पर्व का वह प्रसंग आज भी ये सोचने में मजबूर कर देता है कि कौरवों के द्वारा द्रौपदी का हुआ अपमान क्या वास्तव में सही था। जब वनवास के दौरान काम्यक वन में पांडव और द्रौपदी से श्री कृष्ण मिलने आए, तो उनके कष्टों को देखकर उन्हें काफी क्रोध आया और वह कौरवों का नाश करने से चल पड़ें। लेकिन अर्जुन और द्रौपदी ने उनकी स्तुति करके उन्हें शांत किया। इसके साथ ही द्रौपदी ने अपने साथ हुए अपमान और पीड़ा को भगवान श्री कृष्ण के सामने कहा। पाञ्चाली ने उन पर हुए अन्याय की वह गाथा सुनाई जिसे सुनकर स्वयं जनार्दन की आंखें नम हो गई थीं और पांडवों के सिर भी झुक गए। आइए 'धर्म गाथा' श्रृंखला में आज जानते हैं कि द्रौपदी से श्री कृष्ण को अपनी पीड़ा सुनाते हुए क्या-क्या प्रश्न किए।

द्रौपदी ने श्री कृष्ण से कहा कि मैं आपके प्रति प्रेम होने के कारण आपसे अपना दुःख निवेदन करूंगी, क्योंकि दिव्य और मानव जगत में जितने भी प्राणी हैं। उन सबके ईश्वर आप ही हैं। भगवान कृष्ण! मेरे-जैसी स्त्री जो कुंती पुत्रों की पत्नी, आपकी सखी और धृष्टद्युम्न जैसे वीर की बहन हो। क्या फिर भी उसके केशों को पकड़कर घसीटकर लायी जा सकती है? मैं रजस्वला थी, मेरे कपड़ों पर रक्त के छींटे लगे थे, शरीर पर एक ही वस्त्र था और लज्जा एवं भय से मैं थर-थर कांप रही थी। उस दशा में मुझ दुखिनी अबला को कौरवों की सभा में घसीटकर लाया गया था। भरी सभा में राजाओं की मंडली के बीच अत्यन्त रक्तस्राव होने के कारण मैं रक्त से भीगी जा रही थी। उस अवस्था में मुझे देखकर धृतराष्ट्र के पापी पुत्रों ने जोर-जोर से हंसकर मेरी हंसी उड़ा रहे थे। द्रौपदी का पांडवों पर निकाला गुस्सा मधुसूदन। पांडवों, पांचालों और वृष्णिवंशी वीरों के जीतेजी धृतराष्ट्र के पुत्रों ने दासीभाव से मेरा उपभोग करने की इच्छा प्रकट की। मैं धर्मतः भीष्म और धृतराष्ट्र दोनों की पुत्रवधु हूं, तो भी उनके सामने ही बलपूर्वक दासी बनाई गई। मैं तो इन पांडवों की निंदा करती हूं, जो अपनी यशस्विनी धर्मपत्नी को शत्रुओं द्वारा सताये जाने पर सिर्फ देख रहे होते हैं। भीमसेन के बल को धिक्कार है, अर्जुन के गाण्डीव धनुष को भी धिक्कार है, जो उन नराधमों द्वारा मुझे अपमानित होती देखकर भी सहन करते रहे। इन लोगों के होते हुए दुर्योधन इतना बड़ा अत्याचार करके दो घड़ी भी जीवित रह रहा है। इन चार कारणों से श्री कृष्ण ने की थी द्रौपदी की रक्षा न

मे पतयः सन्ति न पुत्रा न बान्धवाः ।
न भ्रातरः न च पिता न चैव त्वं जनार्दन ॥

पांचाल राजकुमारी कृष्णा लगातार रोती हुए श्री कृष्ण से बोली कि मधुसूदन.. मेरे लिए न पति हैं, न पुत्र हैं, न बान्धव हैं, न भाई हैं, न पिता हैं और न आप ही हैं। हे जनार्दन! आप सब लोग, नीच मनुष्यों द्वारा जो मेरा अपमान हुआ था, उसकी उपेक्षा कर रहे हैं, मानो इसके लिए आपके हृदय में तनिक भी दुःख नहीं है। उस समय कर्ण ने जो मेरी हंसी उड़ायी थी, उससे उत्पन्न हुआ दुःख मेरे हृदय से दूर नहीं होता है।

श्लोक : सम्बन्धाच्चाभिमानाच्च सख्याच्च मधुसूदन।
प्रभुत्वाच्चापि मे रक्ष्या त्वयाहं सततं विभो॥
(महाभारत, वन पर्व, अध्याय 12, श्लोक 121)

श्रीकृष्ण! चार कारणों से आपको सदा मेरी रक्षा करनी चाहिए। एक तो आप मेरे सम्बन्धी, दूसरे अग्नि कुण्ड में उत्पन्न होने के कारण मैं गौरवशालिनी हूं, तीसरे आपकी सच्ची सखी हूं और चौथे आप मेरी रक्षा करने में समर्थ हैं।

धर्म पर द्रौपदी का वह सवाल, जिससे 'धर्मराज' भी निरुत्तर थे द्रौपदी ने श्री कृष्ण के सामने अपने दर्द के साथ खूब विलाप किया और उन्होंने धर्म की रक्षा करने वालों पर सीधा प्रहार किया। उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के सामने उस घृणित कृत्य का स्मरण कराते हुए कहा कि

रजस्वलामेकवस्त्रां सभायां मां नराधमाः।
आनाय्य व्यकुरुर्वाक्यं तद् दुःखं न स्मराम्यहम्॥
(महाभारत, वन पर्व, अध्याय 12, श्लोक 81)

अर्थः मैं रजस्वला (मासिक धर्म) थी और मैने केवल एक ही वस्त्र धारण किए हुए थी। उस नीच पुरुष दुःशासन ने उसकी एक बात नहीं मानी है और उसे बलपूर्वक सभा में घसीटा और अपमानित किया। वह दुःख और अपमान का क्षण कभी भी भूल नहीं सकती हूं।

इस प्रश्न के बाद द्रौपदी ने फिर प्रश्न किया कि, जिससे कृष्ण के अलावा पांडवों ने भी अपना सिर झुका लिया किं नु धर्मः स धर्मज्ञ यत्राहं तादृशी सती।
सभामध्ये समानीता कौरवैर्धर्मदूषिभिः॥
(महाभारत, वन पर्व, अध्याय 12, श्लोक 82)

अर्थः हे धर्म के ज्ञाता श्रीकृष्ण! क्या वह वास्तव में 'धर्म' था, जिसमें मेरे जैसी पतिव्रता और कुलवधू को उन धर्म-दूषित कौरवों ने सभा के बीच में इस प्रकार अपमानित किया? द्रौपदी के तर्कों का था बहुत ही गहरा अर्थ

द्रौपदी का यह प्रश्न केवल कौरवों के लिए नहीं था, बल्कि वहां बैठे भीष्म, धृतराष्ट, द्रोण सहित अन्य महान राजाओं और उन पतियों के लिए भी था, जो उस सभा में बैठे थे। लेकिन सभा में एक स्त्री के मार्यदा की रक्षा न कर सके।

श्री कृष्ण को लेनी पड़ी ये प्रतिज्ञा

जब द्रौपदी ने इस प्रकार से श्री कृष्ण से कहा, तो उन्होंने उत्तर देते हुए है कि भाविनि तुम जिन पर क्रुद्ध हुई हो। आने वाले समय में उनकी स्त्रियां अपने प्राण प्यारे पतियों के लिए रोती हुई दिखेगी। मैं पांडवों के हित के लिए हर एक चीज करूंगा। शोक न करो। मैं सत्य प्रतिज्ञा लेकर ये कह रहा कि आने वाले समय में तुम एक बार फिर से तुम राज रानी बनोगी। प्रिय सखी कृष्णे आसमान फट पड़े, हिमालय पर्वत विदीर्ण हो जाए, पृथ्वी के टुकड़े-टुकड़े हो जाए और समुद्र सूख जाए। लेकिन मेरी बातें बिल्कुल भी झूठी नहीं होगी।

श्री कृष्ण की प्रतिज्ञा के बाद अर्जुन ने कहीं ये बात द्रौपदी ने अपनी बातों के उत्तर में भगवान श्रीकृष्ण के मुख से ऐसी बातें सुनकर उन्होंने अर्जुन की ओर देखा। तब अर्जुन ने द्रौपदी से कहा कि देवी जैसा तुमसे मधुसुदन ने कहा वैसा होकर रहेगा। ये टल नहीं सकता है।

द्रौपदी के भाई धृष्टद्युम्न ने कहीं ये बात धृष्टद्युम्न ने कहा कि मैं द्रोण को मार डालूंगा, शिखण्डी भीष्म का वध करेंगे, भीमसेन दुर्योधन को मार गिराएंगे और अर्जुन कर्ण को यमलोक भेज देंगे। भगवान श्रीकृष्ण और बलराम का आश्रय पाकर हम लोग युद्ध में शत्रुओं के लिये अजेय हैं। इन्द्र भी हमें रण में परास्त नहीं कर सकते। फिर धृतराष्ट्र के पुत्रों की तो बात ही क्या है?

आज का राशिफलः कर्क और सिंह को निवेश के साथ लाभ के मिलेंगे शानदार अवसर

मेष राशि धन के मामले में आज आपको थोड़ा संभलकर चलने और अपने खर्च पर कंट्रोल रखने की जरूरत है। मंगलदेव आपके अंदर ज्यादा पैसे कमाने का जोश और एनर्जी तो भर रहे हैं, लेकिन वृषभ राशि में सूर्यदेव और बुधदेव की मौजूदगी यह इशारा कर रही है कि आज धन को सुरक्षित रखना ही आपके लिए सबसे ज्यादा जरूरी होना चाहिए। अगर आप घर के कामकाज, मरम्मत या जमीन-जायदाद में लंबे समय के लिए पैसा लगाने की सोच रहे हैं, तो उसके लिए आज का दिन बहुत बढ़िया है।

वृषभ राशि आज का दिन आपकी आर्थिक स्थिति को काफी मजबूत बनाने के अच्छे संकेत दे रहा है। आपके धन भाव यानी दूसरे घर से चंद्रदेव का गोचर होने की वजह से आपको अपने किसी पुराने आर्थिक प्रयास का पूरा फल या कोई बढ़िया धन लाभ मिल सकता है। आपकी ही राशि में बैठे बुधदेव आपको गजब की लॉजिकल और परखने की क्षमता देंगे, जिससे आप किसी भी अच्छी डील को बहुत आसानी से पहचान लेंगे।

मिथुन राशि आज शाम का समय आपके पैसों की समझ और सोच में एक बड़ा और अच्छा बदलाव लेकर आने वाला है। दिन का समय जहां आपकी पर्सनालिटी और आपके प्रभाव को बढ़ाने वाला रहेगा, वहीं रात का समय आपके बैंक बैलेंस पर असर डालेगा। अपने बजट को दोबारा देखने या बचत करने का एक मजबूत प्लान तैयार करने के लिए यह बहुत ही बढ़िया समय है। बृहस्पतिदेव की कृपा यह पक्का कर रही है कि लंबे समय के लिए आपके आय के साधन शानदार बने रहें, बशर्ते आप धन से जुड़े मामलों में पूरी तरह अनुशासन बनाए रखें।

कर्क राशि आपके ग्यारहवें घर यानी मुनाफे के क्षेत्र में वृषभ राशि का असर होने की वजह से आज आपके पैसों की स्थिति काफी मजबूत और स्थिर बनी रहेगी। किसी दोस्त या तजुर्बेकार एडवाइजर से आज आपको लंबे समय के निवेश के मामले में कोई बहुत ही काम की और अच्छी सलाह मिल सकती है। आज जैसे ही चंद्रदेव आपकी ही राशि में आएंगे, आपका मन घर की सुख-सुविधा और ऐश-ओ-आराम की चीजों पर पैसा खर्च करने का कर सकता है। आज आपको ज्यादा चीजें खरीदने के बजाय अच्छी और टिकाऊ चीजों पर ध्यान देना चाहिए।

सिंह राशि   पैसों के मामले में आज आपका दिन बहुत ही मजबूत, समझदारी भरा और अच्छी एनर्जी से भरा रहने वाला है। काम के सिलसिले में किसी

भी बड़ी या ऊंचे लेवल की बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए आज का दिन बहुत बढ़िया है, जिससे आपको आगे चलकर लंबे समय तक बड़ा फायदा मिल सकता है। हालांकि, आज रात को चंद्रदेव आपके बारहवें घर (गुप्त चीजों और खर्चों के स्थान) में जाने वाले हैं, इसलिए अपने बैंक खातों और पैसों के लेन-देन की एक बार अच्छे से दोबारा जांच कर लें ताकि किसी छोटी-मोटी गलती या छूटे हुए भुगतानों से बचा जा सके।

कन्या राशि पैसों के मामले में आज आपकी किस्मत काफी अच्छी और चमकती हुई दिखाई दे रही है। आज खास तौर पर आपको नौकरी में किसी बोनस या किसी लंबे समय के लिए किए गए निवेश से बड़ा फायदा मिल सकता है। वृषभ राशि का असर आपको अपने धन से जुड़े मामलों को बड़े स्तर पर और दूर की सोच के साथ देखने के लिए प्रेरित करेगा। आज रात को होने वाला चंद्र गोचर आपकी आय के सेकेंडरी सोर्स या मेहनत से मिलने वाले फायदे की तरफ संकेत देता है।

तुला राशि आपके आठवें भाव में वृषभ राशि का प्रभाव यह संकेत दे रहा है कि दूसरों से जुड़े वित्तीय मामले जैसे टैक्स, वसीयत, या जॉइंट अकाउंट पर आज आपको विशेष ध्यान देने की जरूरत पड़ेगी। रिसर्च करने और वित्तीय योजनाएं बनाने के लिए आज का दिन बहुत अच्छा है, लेकिन किसी भी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने के लिए यह समय सही नहीं है। करियर से जुड़े किसी मौके को लेकर यदि आज रात आपके मन में कोई गट फीलिंग आती है, तो उस पर पूरा भरोसा रखें।

वृश्चिक राशि आर्थिक नज़रिये से आज का दिन आपके लिए पुरानी चीजों को मजबूत करने और बचत करने का है। सुबह का समय किसी पुराने कर्ज को चुकाने या जॉइंट इन्वेस्टमेंट की जाँच परख करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेगा। जैसे-जैसे रात आगे बढ़ेगी, आपको भविष्य के फायदे , विदेशी भूमि या उच्च शिक्षा से जुड़े किसी बेहतरीन वित्तीय अवसर के संबंध में कोई शुभ समाचार या संकेत मिल सकता है। काम करने के प्रैक्टिकल तरीके अपनाने के साथ साथ अपने लक्ष्यों पर पूरी नजर बनाए रखें।

धनु राशि का आर्थिक रूप से आज का दिन पूरी तरह से सही स्ट्रेटेजी बनाकर चलने का है। जहां सुबह का समय पार्टनर्स के साथ किसी बड़ी डील या सौदे पर चर्चा करने के लिए अच्छा है, वहीं शाम का समय अपने खातों की गहराई से जांच करने के लिए बहुत उपयुक्त रहेगा। बीमा, टैक्स या पैसिव इनकम के स्रोतों की खोज करने के लिए यह समय बहुत ही सकारात्मक है। देर रात यदि आपको धन के मामले में कोई गट फीलिंग महसूस होती है, तो उस पर भरोसा करें; आपका अवचेतन मन किसी बड़े लाभ की योजना बना रहा है।

मकर राशि आज आपकी वित्तीय स्थिरता आपकी क्रिएटिविटी और पैसो के सही मैनेजमेंट के माध्यम से ही संभव हो पाएगी। वृषभ राशि का प्रभाव यह बताता है कि आज आपका ध्यान, मुख्य रूप से अपनी रुचियों या बच्चों की शिक्षा से जुड़े निवेश पर केंद्रित रह सकता। आज रात जैसे ही चंद्रदेव का गोचर बदलेगा, आपको किसी प्रैक्टिकल व्यक्ति से कोई बहुत अच्छी वित्तीय सलाह या कोई नया बिजनेस प्रस्ताव मिल सकता है।

कुंभ राशि शनिदेव के प्रभाव के कारण आज आपकी आर्थिक स्थिति धीमी लेकिन बहुत ही निरंतर और स्थिर प्रगति की ओर बढ़ रही है। आपके घरेलू क्षेत्र पर वृषभ राशि की ऊर्जा आपको घर की सजावट या पारिवारिक सुख-सुविधाओं पर धन खर्च करने के लिए प्रेरित कर सकती है। हालांकि, आज रात होने वाला चंद्रदेव का गोचर आपको अपने दैनिक खर्चों और बजट के मैनेजमेंट के प्रति अधिक किफायती, अनुशासित और व्यवस्थित नजरिया अपनाने की प्रेरणा देगा।

मीन राशि आज आर्थिक स्थिति बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करेगी कि आप लोगों के साथ कितने प्रभावी ढंग से बातचीत और नेटवर्किंग करते हैं। आपके तीसरे भाव में वृषभ राशि की ऊर्जा यह दर्शाती है किलोकल कॉन्टेक्ट्स या भाई-बहनों के माध्यम से आपको धन लाभ की कोई बहुत उपयोगी सलाह मिल सकती है। हालांकि शाम का समय मनोरंजन या मौज-मस्ती पर धन खर्च करने के लिए प्रेरित करेगा, लेकिन आपकी राशि में बैठे शनिदेव आपको अपनी लॉन्ग टर्म की आर्थिक सुरक्षा के प्रति हमेशा सचेत और जागरूक बनाए रखेंगे।

अंतिम संस्कार के बाद हिंदू धर्म में क्यों लगाते हैं तुलसी का पौधा ? गरुड़ पुराण में बताया गया रहस्य

हिंदू धर्म में मृत्यु को 16 संस्कारों में से अंतिम संस्कार माना जाता है। आत्मा के शरीर छोड़ने से लेकर अंत्येष्टि तक कई तरह की रस्में निभाई जाती हैं। इसकी में से एक हैं दाह संस्कार के बाद तुलसी का पौधा लगाना। तुलसी के पौधे को अत्यंत पवित्र और साक्षात माता लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है। यही कारण है कि पूजा-पाठ से लेकर अंतिम संस्कार की रस्मों में तुलसी का इस्तेमाल किया जाता है। वहीं, गरुड़ पुराण में मृत्यु के पश्चात किए जाने वाले कार्यों में तुलसी का विशेष महत्व बताया गया है। गरुड़ पुराण के नौवें अध्याय में भगवान विष्णु गरुड़ जी से कहते हैं कि जिस घर में तुलसी का पौधा लगा होता है, वह घर किसी तीर्थ के समान पवित्र माना जाता है। ऐसे घर में यमराज के दूत प्रवेश नहीं करते। असंख्य पाप करने वाला व्यक्ति भी प्राण त्यागते समय अगर उसके पास तुलसी की मंजरी रखी है तो, उस घर में यमदूत प्रवेश नहीं कर सकते हैं। वही, मृत्यु के समय मुंह में तुलसी के पत्ते और तिल रखने से वह व्यक्ति पापों से मुक्त होकर भगवान विष्णु के धाम को प्राप्त

करता है और प्राण त्यागते समय उसे कष्ट नहीं झेलने पड़ते।

सनातन परंपरा में आत्मा की शांति और मोक्ष प्राप्ति के लिए तुलसी को महत्वपूर्ण माना गया है। यही वजह है कि अंतिम संस्कार के बाद घर या आंगन में तुलसी का पौधा लगाया जाता है। तुलसी में भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी का वास माना जाता है। कहा जाता है कि मृत्यु के बाद घर के वातावरण में नकारात्मकता उत्पन्न हो जाती है और शोक का प्रभाव बढ़ जाता है। ऐसे समय में तुलसी का पौधा घर के वातावरण को शुद्ध बनाता है और नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए तुलसी का उपाय गरुड़ पुराण में कहा गया है कि दाह संस्कार के समय चिता में तुलसी की लकड़ी का प्रयोग करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है। अगर किसी की अकाल मृत्यु हुई हो, तो घर में तुलसी का पौधा लगाकर उसकी पूजा करने से उस आत्मा को शांति मिलती है। वहीं, जिस घर में रोजाना तुलसी के पौधे की पूजा होती है, उस घर में कभी यमदूत प्रवेश नहीं करते।

20 मई को देशभर के केमिस्ट हड़ताल पर व्यापार नहीं,मरीजों की सुरक्षा और जनस्वास्थ्य का बड़ा सवाल

ऑनलाइन फार्मेसी,नकली दवाइयों और फर्जी पर्चियों के खिलाफ बैतूल जिले के 800 से अधिक मेडिकल स्टोर रहेंगे बंद

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

बुधवार 20 मई को आयोजित राष्ट्रव्यापी केमिस्ट हड़ताल केवल व्यापारिक हितों का मुद्दा नहीं,बल्कि जनस्वास्थ्य,मरीजों की सुरक्षा और दवा व्यवस्था की पारदर्शिता से जुड़ा गंभीर विषय बन चुकी है।बैतूल जिले के 10 ब्लॉकों में संचालित लगभग 800 से अधिक मेडिकल स्टोर बुधवार को पूर्णतः बंद रहेंगे। यह बंद जिला औषधि विक्रेता संघ के आह्वान पर ऑनलाइन फार्मेसी, कॉरपोरेट कंपनियों की कथित मनमानी,नकली दवाइयों और मरीजों की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों को लेकर किया जा रहा है।जिला औषधि विक्रेता संघ के जिला अध्यक्ष मनजीत सिंह साहनी एवं जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र मानकर ने जानकारी देते हुए बताया कि ऑनलाइन दवा बिक्री व्यवस्था में लगातार गंभीर खामियां सामने आ रही हैं।बिना सत्यापन दवाइयों की ऑनलाइन उपलब्धता,भारी डिस्काउंट की प्रतिस्पर्धा और कॉरपोरेट कंपनियों के दबाव से पारंपरिक मेडिकल व्यवसाय प्रभावित हो रहा है,वहीं मरीजों की सुरक्षा भी खतरे में पड़ रही है।संघ के पदाधिकारियों का कहना है कि एआई तकनीक का दुरुपयोग कर फर्जी पर्चियां बनाई जा रही हैं,जिससे मरीजों को गलत दवाइयां मिलने का खतरा बढ़ गया है। कई मामलों में यह तक स्पष्ट नहीं हो पाता कि पर्ची किस डॉक्टर ने जारी की है।फर्जी ऑनलाइन परामर्श और गैर प्रमाणित डॉक्टरों की बढ़ती सक्रियता लोगों को गुमराह कर रही है। औषधि विजेता संघ के क्षेत्रीय अध्यक्ष राजा जैन ने बताया कि एक ही पर्चे का कई बार उपयोग कर बार-बार दवाइयां खरीदी जा रही हैं,जिससे दवाओं के दुरुपयोग और अवैध कारोबार को बढ़ावा मिल रहा है।विशेष रूप से नशे की आदत डालने वाली दवाइयों की आसान ऑनलाइन उपलब्धता युवाओं के लिए बड़ा खतरा बनती जा रही है। वहीं एंटीबायोटिक दवाओं की अनियंत्रित बिक्री के कारण एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR) जैसी गंभीर समस्या तेजी से बढ़ रही है।मरीजों की सुरक्षा से जुड़ी

12 प्रमुख मांगें-

केमिस्ट संगठनों ने राष्ट्रव्यापी हड़ताल के दौरान सरकार के सामने 12 प्रमुख मांगें रखी हैं, जिनमें मुख्य रूप से।

ऑनलाइन दवा बिक्री पर सख्त नियंत्रण
फर्जी पर्चियों और एआई आधारित दुरुपयोग पर रोक
नकली दवाइयों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई
कॉरपोरेट कंपनियों द्वारा भारी डिस्काउंट नीति समाप्त करना।
प्रमाणित डॉक्टरों के बिना ऑनलाइन परामर्श बंद करना
नशीली दवाओं की ऑनलाइन बिक्री पर प्रतिबंध
एंटीबायोटिक दवाओं की नियंत्रित बिक्री सुनिश्चित करना। मरीजों के डेटा और गोपनीयता की सुरक्षा
दवा वितरण प्रणाली में पारदर्शिता
स्थानीय मेडिकल व्यवसायों की सुरक्षा
लाइसेंस नियमों का सख्ती से पालन
जनस्वास्थ्य हित में दवा नियंत्रण कानून मजबूत करना

जिला औषधि विक्रेता संघ ने बैतूल जिले के सभी मेडिकल संचालकों से अपील की है कि वे अपनी दुकानें बंद रखकर इस आंदोलन को सफल बनाएं, ताकि सरकार और संबंधित एजेंसियों का ध्यान मरीजों की सुरक्षा और दवा व्यवस्था में बढ़ती अनियमितताओं की ओर आकर्षित किया जा सके।

सारनी में गैस की कालाबाजारी का खेल बेखौफ,938 रुपए की टंकी 15 सौ रुपए में घर-घर पहुंच रही बुकिंग कराने वाले उपभोक्ता कई दिनों तक परेशान, जबकि ब्लैक में तुरंत मिल रही गैस एजेंसियों और वेंडरों की मिलीभगत पर उठे सवाल

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर पालिका क्षेत्र में रसोई गैस उपभोक्ताओं की परेशानी लगातार बढ़ती जा रही है। एक ओर आम नागरिक समय पर गैस सिलेंडर नहीं मिलने से परेशान हैं,तो दूसरी ओर गैस एजेंसियों के वेंडर खुलेआम 15 सौ में सिलेंडर घर पहुंचाकर कालाबाजारी को बढ़ावा दे रहे हैं।सवाल यह है कि आखिर प्रशासन की नजरों के सामने यह खेल कब तक चलता रहेगा? सारनी और बगडोना क्षेत्र में गैस सिलेंडर की कालाबाजारी अब चरम सीमा पर पहुंचती दिखाई दे रही है।उपभोक्ताओं का आरोप है कि नियमित बुकिंग कराने के बाद उन्हें समय पर गैस सिलेंडर उपलब्ध नहीं कराया जा रहा,जबकि एजेंसी से जुड़े वेंडर मोटी रकम लेकर तत्काल घर पहुंच सेवा दे रहे हैं।जानकारी के अनुसार,सारनी नगर पालिका परिषद क्षेत्र में तीन गैस एजेंसियां संचालित हैं। इनमें पाठाखेड़ा स्थित एजेंसी,वेस्टर्न कोलफील्ड लिमिटेड समिति द्वारा संचालित गैस समिति और बगडोना बस्ती की ग्रामीण गैस सेवा शामिल है। लेकिन उपभोक्ताओं का कहना है कि इन एजेंसियों से जुड़े कुछ वेंडर 938 रुपए कीमत वाले घरेलू गैस सिलेंडर को 15 सौ रुपए तक में बेच रहे हैं। बताया जा रहा है कि यह सिलेंडर ऑटो और मोटरसाइकिल के माध्यम से घर-घर पहुंचाए जा रहे हैं। वहीं जिन उपभोक्ताओं ने वैध तरीके से बुकिंग कराई है, उन्हें दो से चार दिन तक इंतजार करना पड़ रहा है। राहुल गैस एजेंसी द्वारा उपभोक्ताओं को कैंपस से सिलेंडर वितरण किया जाता है,जबकि बगडोना क्षेत्र के उपभोक्ताओं को ग्राम पंचायत सलैया के हाट बाजार मैदान तक पहुंचकर सिलेंडर लेना पड़ता है।इससे लोगों को एक से डेढ़ किलोमीटर अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ती है। उपभोक्ताओं ने यह भी आरोप लगाया कि वितरण स्थल पर तैनात कर्मचारियों का व्यवहार बेहद अमानवीय और अपमानजनक रहता है।

अब बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि जब घरेलू गैस सिलेंडर की निर्धारित कीमत 938 रुपए है,तो आखिर वेंडर किसके संरक्षण में 15 सौ रुपए में सिलेंडर बेच रहे हैं। क्या एजेंसी संचालकों और वेंडरों के बीच किसी प्रकार की सांठगांठ है यदि ऐसा नहीं है तो फिर खुलेआम हो रही इस कालाबाजारी पर कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है। स्थानीय लोगों ने जिला कलेक्टर और खाद्य विभाग से मांग की है कि पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर कड़ी कार्रवाई की जाए, ताकि आम उपभोक्ताओं को राहत मिल सके और गैस वितरण व्यवस्था पारदर्शी बन सके।

छठ पूजा घाट का होगा सौंदर्गीकरण,आवारा श्वानों पर कसेगी लगाम,विभिन्न निर्माण कार्यों की दरों को दी मंजूरी

प्रेसिडेंट इन काउंसिल की बैठक में तय एजेंडे अनुसार 33 प्रस्तावों पर चर्चा,गर्मी के दिनों स्वच्छ भारत मिशन और पेजयल सप्लाई के कार्यों पर ज्यादा ध्यान देने के निर्देश

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

नगर पालिका परिषद सारनी में मंगलवार को प्रेसिडेंट इन काउंसिल की बैठक का आयोजन किया गया।बैठक में तय एजेंडे अनुसार विभिन्न 33 बिंदुओं पर चर्चा की गई। बैठक के दौरान छठ पूजा घाट के सौंदर्गीकरण के लिए ऑनलाइन प्राप्त दरों को मंजूरी दी गई।इसके अलावा अन्य निर्माण कार्यों की दरों पर विचार विमर्श हुआ।प्रेसिडेंट इन काउंसिल की बैठक सायं 5 बजे से सभाकक्ष में हुई।बैठक में नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बरदे,सभापति भीम बहादुर थापा,भावना माकोड़े,संगीता धुर्वे,बेबी ठाकुर,रोशनी झपाटे एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी सी.के.मेश्राम उपस्थित थे। बैठक में एजेंडे अनुसार सभी 33 बिंदुओं पर चर्चा हुई।इसमें मुख्यतः छठ पूजा घाट के सौंदर्गीकरण को लेकर चर्चा हुई।ऑनलाइन निविदा पर प्राप्त दर को मंजूरी दी गई।इसके अलावा निर्माण कार्य,रंग, रोगन,पुताई,टायर-ट्यूब के लिए वार्षिक दरों पर चर्चा हुई। मठारदेव बाबा के तलहटी मंदिर में बने मंगल भवन के कमरों की साज-सज्जा के कार्य की दरों की मंजूरी हुई। सार्वजनिक पार्कों में जिम उपकरणों की स्थापना को स्वीकृति दी गई। वार्ड 9,17,22,24 एवं 35 के पार्कों के संचालन, संधारण कार्य की निविदा दरों पर भी चर्चा की गई।

आवारा श्वानों का होगा बधियाकरण एवं टीकाकरण

नगर पालिका आवारा श्वानों का बधियाकरण एवं टीकाकरण करेगी। इसके लिए नगर पालिका ने निविदा जारी की। इसकी दरों पर विचार,विमर्श हुआ। बैठक के दौरान अध्यक्ष एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी ने स्वच्छ भारत अभियान एवं भीषण गर्मी को देखते हुए सतत जलप्रदाय के कार्य को प्राथमिकता के आधार पर करने के निर्देश दिए।

कांग्रेस दफ्तर के उद्घाटन में सियासी दरारें उजागर,बुजुर्ग नेताओं की बेरुख़ी बनी चर्चा का मरकज़

नाना परिसर में फीता कटा, मगर तजुर्बेकार कांग्रेसियों की गैर मौजूदगी ने खड़े किए कई सवाल

दैनिक कारखाने का सफर। बैतूल

ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के नए कार्यालय का उद्घाटन 18 मई को नाना परिसर में बड़े उत्साह और सियासी दिखावे के साथ किया गया। जिला कांग्रेस अध्यक्ष की मौजूदगी में आयोजित इस कार्यक्रम को कांग्रेस संगठन की मजबूती का पैगाम बताया गया,लेकिन हकीकत में यह आयोजन पार्टी के भीतर बढ़ती खेमेबाज़ी, नाराज़गी और आपसी तकरार की तस्वीर पेश करता नजर आया।कार्यक्रम में जहां कुछ चुनिंदा चेहरों को तरजीह दी गई,वहीं वर्षों से कांग्रेस की नींव मजबूत करने वाले बुजुर्ग और वरिष्ठ कार्यकर्ताओं को नजरअंदाज कर दिया गया।राजनीतिक गलियारों में सबसे ज्यादा चर्चा इस बात की रही कि सारनी,पाथाखेड़ा,शोभापुर और बगडोना के कई पुराने और वफादार कांग्रेसी इस आयोजन से पूरी तरह नदारत रहे।कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एस.के.रिजवी,शब्बीर बेदी जैसे समर्पित कार्यकर्ता कार्यक्रम में दिखाई नहीं दिए।इतना ही नहीं,सारनी के सबसे वरिष्ठ और बुजुर्ग कांग्रेसी नेता अशोक पाल तक को आमंत्रित नहीं किया गया। यह बात कांग्रेस समर्थकों और पुराने कार्यकर्ताओं के बीच गहरी मायूसी और नाराज़गी का सबब बनी हुई है।कार्यक्रम में वरिष्ठ कांग्रेसियों में भोला कांति जरूर मौजूद दिखाई दिए,लेकिन पुराने चेहरों की कमी साफ महसूस की गई। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि जिस पार्टी की पहचान अनुभवी नेताओं और जमीनी कार्यकर्ताओं से रही हो,वहां अगर तजुर्बे को दरकिनार किया जाएगा तो संगठन की बुनियाद कमजोर होना तय माना जाएगा। नाना परिसर में कार्यालय खोले जाने को लेकर भी कई तरह की चर्चाएं सियासी फिजाओं में तैर रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि यह स्थान विशेष समुदाय की संवेदनशीलता और विवादों के कारण हमेशा चर्चा में रहा है।ऐसे में कांग्रेस द्वारा यहां कार्यालय खोलना कई सवाल खड़े कर रहा है। कुछ लोगों का मानना है कि पार्टी को ऐसा स्थान चुनना चाहिए था,जहां हर वर्ग और समुदाय के लोग सहजता से आ-जा सकें।उधर,ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के भीतर चल रही अंदरूनी खींचतान भी उद्घाटन समारोह के दौरान खुलकर सामने आ गई।जिला कांग्रेस अध्यक्ष के स्वागत को लेकर जय स्तंभ चौक,मस्जिद तिराहा और अन्य स्थानों पर अलग-अलग गुटों द्वारा अलग-अलग स्वागत कार्यक्रम आयोजित किए गए।यह नजारा साफ इशारा कर रहा था कि कांग्रेस एकजुटता का दावा तो कर रही है,मगर अंदरखाने कई खेमों में बंटी हुई है।दिलचस्प बात यह रही कि कार्यालय उद्घाटन स्थल पर पाथाखेड़ा और शोभापुर से बड़ी संख्या में कार्यकर्ता,पदाधिकारी और महिलाएं पहुंचीं,लेकिन सारनी के 13 वार्डों से कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पार्षदों की मौजूदगी बेहद सीमित रही। इसे लेकर शहर में तरह-तरह की चर्चाएं गर्म हैं।अब निगाहें वर्ष 2027 के नगरी निकाय चुनाव और 2028 के विधानसभा चुनाव पर टिकी हैं।कांग्रेस युवा जोश और नई रणनीतियों के दम पर जीत का दावा कर रही है,लेकिन सवाल यह है कि क्या बिना बुजुर्ग नेताओं के अनुभव और पुराने कार्यकर्ताओं के भरोसे के सियासी मैदान फतह किया जा सकेगा। सियासत के जानकार मानते हैं कि युवाओं के पास जज़्बा और ऊर्जा जरूर है,मगर बुजुर्ग नेताओं के पास वह तजुर्बा है जो चुनावी बिसात पर हार-जीत तय करता है। फिलहाल ब्लॉक कांग्रेस कमेटी पर यह इल्ज़ाम लग रहा है कि वह पुराने रंगों को मिटाकर नई चमकदार तस्वीर पेश करने की कोशिश में जुटी है।अब देखना दिलचस्प होगा कि यह नया कार्यालय कांग्रेस संगठन के लिए रौनक और एकजुटता का मरकज़ बनता है या फिर अंदरूनी सियासत की दरारों का नया अड्डा साबित होता है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949